Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष-41 अंक-45
कल्पादि सम्वत् 1972949117
सम्पादक मुन्ना कुमार शर्मा
दिनांक 31 जनवरी से 06 फरवरी 2018 तक
माघ शुक्ल पूर्णिमा से फाल्गुन कृष्ण षष्ठी सम्वत् 2074 तक
वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

मौत का सच... पृष्ठ-3
डायबिटीज में हृदय....... पृष्ठ-4
महर्षि दयानन्द का आर्थिक... पृष्ठ-5
पुणे का शनिवारवाडा.. पृष्ठ-8
लड़खड़ाता न्यायतंत्र... पृष्ठ-12

बालवीर हकीकत राय बलिदान दिवस पर बाल प्रतिभा खोज प्रतियोगिता का भव्य आयोजन एवं हिन्दू वीरों का सम्मान

बालवीर हकीकत राय की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए

श्याम जाजू को सम्मानित करते हुए हिन्दू महासभा नेता

नई दिल्ली 22 जनवरी 2018, आज अखिल भारत हिन्दू महासभा, दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में पार्टी मुख्यालय, हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली में हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये बलिदान होने वाले बालवीर हकीकत राय का बलिदान दिवस समारोह पूरी भव्यता के साथ आयोजित किया गया। सर्वप्रथम मां सरस्वती की पूजा व हवन किया गया। तत्पश्चात बालवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह की शुरूआत हुई। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक व राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। मंच संचालन राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने किया। दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष सुनील कुमार ने गुलदस्ता भेंटकर मुख्य अतिथि भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू, समारोह की अध्यक्षता कर रहे हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक व समारोह के विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा का स्वागत किया। श्याम जाजू ने कहा कि हमें बालवीर हकीकत राय से प्रेरणा लेनी चाहिए व उनके दिखाये रास्ते पर चलना चाहिए। हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक ने सभी उपस्थित जनों को समारोह की शुभकामनाएं दीं तथा कहा कि हमें बालवीर हकीकत राय के त्याग, बलिदान व साहस से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने प्राण त्याग दिये, परन्तु हिन्दू धर्म का त्याग करना स्वीकार नहीं किया। समारोह को संबोधित करते हुए हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा कि वीर हकीकत राय ने त्याग व बलिदान के माध्यम से राष्ट्र एवं हिन्दू समाज के सामने एक आदर्श, प्रस्तुत किया है। उन्होंने हमें सिखाया है कि हमें हिन्दुत्व के मार्ग से कभी भी अलग नहीं होना चहिए। उनका मानना था कि हिन्दू धर्म दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धर्म है, हमें अपने धर्म पर गर्व करना चाहिए। उन्होंने हिन्दुस्तान के निवासियों का आह्वान किया कि हमें अखंड हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करना है तथा हिन्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तान का विकास करना है। अखिल भारत हिन्दू महासभा वीर हकीकत राय के अधूरे सपनों को पूरा करने के लिये दृढ़संकल्प है। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने सभी शेष पृष्ठ १० पर

हिन्दू महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने राम मंदिर एवं गौरक्षा के लिये राष्ट्रव्यापी जनांदोलन की घोषणा की

नई दिल्ली 22 जनवरी 2018, आज नई दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय हिन्दू महासभा भवन में अखिल भारत हिन्दू महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक ने किया तथा संचालन राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा ने किया। स्वातंत्र्य वीर सावरकर, भाई परमानन्द एवं पं० मदन मोहन मालवीय के चित्रों पर माल्यार्पण किया गया तथा गायत्री मंत्रोच्चार के साथ बैठक प्रांरभ हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक ने सदस्यों का आहवान किया कि हमें हिन्दू महासभा के महान नेताओं वीर सावरकर, भाई परमानन्द, डा. वी.एस. मुंजे, लाला लाजपत राय, महंत दिग्विजय नाथ के अधूरे सपनों को पूरा करने के लिये अखंड हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के लिये सक्रियता पूर्वक लग जाना चाहिए। राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा कि अटल विहारी वाजपेयी तथा नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने १० वर्षों तक देश पर शासन किया है। परन्तु अभी तक न तो राम मंदिर बना है, न ही धारा–३७० समाप्त हुई है, न ही समान नागरिक कानून बना है और न ही गौहत्या को रोकने के लिये कोई केन्द्रीय कानून बना है। भाजपा ने देश के १०० करोड़ हिन्दुओं के साथ धोखा किया है। हमें इन मुददों पर देश की जनता को जागरूक करना है तथा जनविरोधी सरकार के विरूद्ध जनता को लाभबंद करना है। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने सभी सदस्यों का स्वागत किया तथा आजीवन सदस्यों की सूची की जानकारी दी। राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति ने श्रीराम जन्मस्थान पर राम मंदिर बनाने, गौहत्या को बंद करने के लिये मजबूत केन्द्रीय कानून बनाने, समान नागरिक कानून बनाने व धारा–३७० को समाप्त करने के लिये केन्द्र की राजग सरकार के विरूद्ध राष्ट्रव्यापी शेष पृष्ठ १० पर

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति बैठक में हिन्दू महासभा नेता

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति बैठक में हिन्दू महासभा नेता व कार्यकर्त्ता

बालवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह 2018

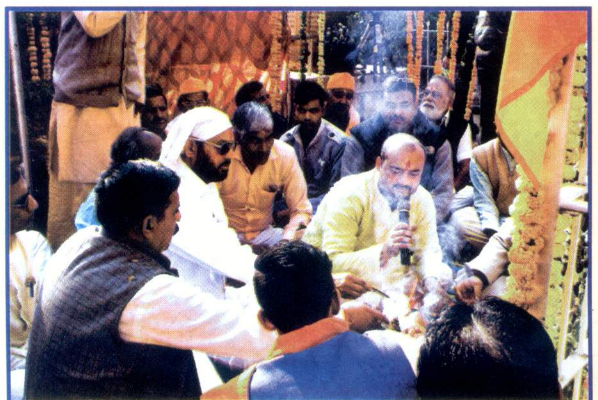

यज्ञ में सम्मिलित हिन्दू महासभा के नेता व कार्यकर्ता

यज्ञ के बाद आरती करते हुए हिन्दू महासभा के नेता

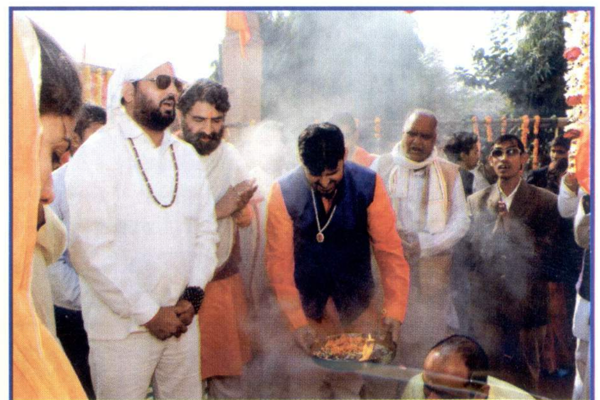

यज्ञ के बाद आरती करते हुए हिन्दू महासभा के नेता व कार्यकर्ता

वीर हकीकतराय अमर रहें का घोष करते हुए हिन्दू महासभा नेता

वीर सावरकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए

भाई परमानन्द की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए

बालवीर हकीकत राय के चित्र पर दीप प्रज्वलित करते राष्ट्रीय महामंत्री

बालवीर हकीकत राय के चित्र पर आरती करते राष्ट्रीय अध्यक्ष

राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी मंच का संचालन करते हुए

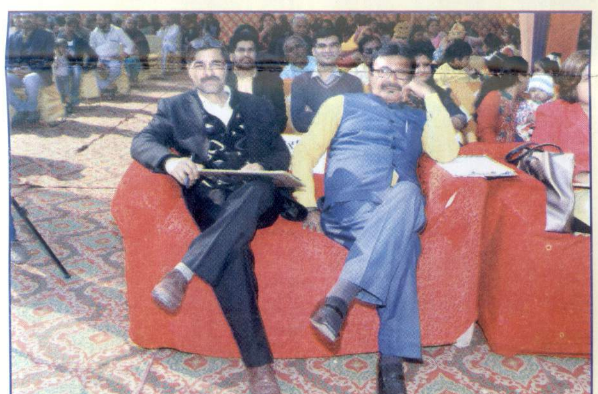

प्रतियोगिता का निर्णायक मंडल और श्रोता

राष्ट्रीय महामंत्री व दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष

स्कूल के बच्चों द्वारा देशभक्ति गीत पर नाट्य

स्कूल के बच्चों द्वारा देशभक्ति गीत पर नाट्य

स्कूल के बच्चों द्वारा देशभक्ति गीत पर नाट्य

स्कूल के बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 31 जनवरी से 06 फरवरी 2018 तक

अध्यक्षीय

मौत का सच आये देश के सामने

सोहराबुद्दीन फर्जी मुठभेड़ मामले की सुनवाई कर रहे सीबीआई अदालत के जज ब्रजगोपाल लोया की आकस्मिक मौत फिलहाल एक पहेली बनी हुई है। लेकिन उनके बेटे अनुज लोया रविवार को मीडिया के सामने आए और कहा कि पिता की मौत को लेकर उन्हें किसी तरह का संदेह नहीं है और उनके परिवार का किसी पर आरोप नहीं है। अनुज ने ये भी कहा कि वो इसे लेकर किसी तरह की जांच नहीं चाहते हैं। २१ बरस के अनुज ने कहा कि पिछले कुछ दिनों से आ रहीं मीडिया रिपोर्टों को देखते हुए मैं ये साफ करना चाहता हूं कि परिवार को इन सब चीजों को लेकर बहुत तकलीफ हो रही है। हमारा किसी पर कोई आरोप नहीं है। हम काफी दर्द में हैं और इन सब चीजों से बाहर आना चाहते हैं। मैं आप लोगों से अनुरोध करता हूं कि कृपया हमें परेशान करने की कोशिश नहीं कीजिए। मैं मीडिया के जरिए ये बात सभी तक पहुंचाना चाहता हूं। जब अनुज से सवाल किया गया कि उनके नाम से सोशल मीडिया में एक पत्र जारी हुआ था क्या वो पत्र उन्होंने लिखा था, क्योंकि वो उनके मौजूदा रुख के विपरीत है तो अनुज ने कहा, जैसा मैने कहा वो भावनात्मक उलझन का दौर था। उस समय संदेह थे लेकिन अब स्थिति साफ है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में उनके साथ मौजूद वकील अमीर नाइक ने कहा कि परिवार नहीं चाहता कि इस मामले पर राजनीति हो और किसी को इसका फायदा हो। बात बिल्कुल सही है कि किसी की भी मौत पर राजनीति नहीं होनी चाहिए, न किसी को इसका फायदा उठाने देना चाहिए। लेकिन मौत अगर संदेहास्पद परिस्थितियों में हुई हो, तो उसकी निष्पक्ष जांच बेहद जरूरी है ताकि यह पता लग सके कि मौत कैसे हुई। अभी अनुज लोया यह मान रहे हैं कि उन्हें अपने पिता की मौत के कारणों पर कोई संदेह नहीं है। लेकिन फरवरी २०१५ में उनके हस्ताक्षर वाला एक पत्र सामने आया है, जिसमें उन्होंने अपने पिता की मौत की जांच करवाने की मांग महाराष्ट्र के मुख्य न्यायाधीश मोहित शाह से करने का उल्लेख किया है। इस पत्र में उन्होंने आशंका जतलाई है कि ये राजनेता उन्हें और उनके परिवार को कुछ नुकसान पहुंचा सकते हैं। यह पत्र हाथ से लिखा हुआ है। जबकि दिसंबर २०१७ में एक टाइप किया हुआ पत्र, अनुज लोया के ही हस्ताक्षर से सामने आया है, जिसमें उन्होंने कहा है कि उन्हें अपने पिता की मौत पर कोई संदेह नहीं है। उनकी मृत्यु के वक्त वे भावनात्मक रूप से परेशान थे और लोगों ने उनके दिमाग में संदेह पैदा कर दिया था। लेकिन सही तथ्यों को जानने के बाद उन्हें पता चला कि उनके पिता की मौत हार्ट अटैक से हुई। रविवार की प्रेस वार्ता में भी अनुज ने दिसंबर २०१७ के पत्र जैसी बातें ही कही हैं। हालांकि उनके दोनों पत्रों में जो विरोधाभास है, वह किस कारण से है, इसका खुलासा होने की भी जरूरत है। दोनों पत्रों में अनुज के हस्ताक्षरों में फर्क है, उसकी बनावट एक समान है, लेकिन दो अलग-अलग कोणों से ये किए गए हैं। इसलिए इन पत्रों की सत्यता परखनी भी जरूरी है। मान लें कि जज लोया की मौत हार्ट अटैक से ही हुई है और उसके पीछे कोई साजिश नहीं है, तो यह खुलासा जांच के बाद हो ही जाएगा। और अगर उसके पीछे कोई गहरी साजिश है, जैसा अंदेशा पहले जतलाया गया है तो उसका पता लगना भी बेहद जरूरी है। दिवंगत जज लोया के परिजनों को पूरा हक है कि वे उनकी मौत पर अपनी राय प्रकट करें। लेकिन वे कोई सामान्य नागरिक नहीं थे कि उनके जिंदा रहने या मृत्यु होने से परिजनों के अलावा किसी को कोई फर्क न पड़े। वे उस सोहराबुद्दीन फर्जी मुठभेड़ मामले की सुनवाई करने वाले जज थे, जिस पर कई बड़े राजनीतिक खेल हो गए और शायद आगे भी होते रहें। उनके कार्यरत होने के दौरान आकस्मिक मृत्यु हुई, इसलिए भी जांच का आधार बनता है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में महाराष्ट्र सरकार से जवाब तलब किया है और चूंकि मामला न्यायाधीन है, इसलिए इस पर निजी राय का खास अर्थ नहीं रहता। लेकिन अनुज लोया को इस तरह प्रेस कांफ्रेंस क्यों करनी पड़ी। उन्हें अपने पिता की मौत के कारणों पर पहले संदेह क्यों हुआ और वे कौन से तथ्य थे, जिनसे उन्हें मौत के कारणों की सच्चाई पता लगी। वे कौन राजनेता हैं, जिनसे उन्हें खतरा था। इन सब का खुलासा होना चाहिए। अन्यथा व्यापम की तरह यह मामला भी रहस्यों के जाल में उलझ कर रह जाएगा।

राष्ट्रीय उद्‌बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

मजबूत होता भारत इस्राइल सहयोग

स्थापित रीति को तोड़ते हुए नरेन्द्र मोदी द्वारा स्वयं हवाई अड्डे पहुंच कर बेंजामिन नेतन्याहू का गर्मजोशीभरा स्वागत करने के साथ ही इस्राइली प्रधानमंत्री का भारत दौरा आरंभ हो गया। इसके पूर्व २००३ में तत्कालीन इस्राइली प्रधानमंत्री एरियल शेरोन के भारत आगमन पर दिल्ली में मुसलिमों द्वारा किये गये विरोध प्रदर्शनों के विपरीत इस बार ऐसा नहीं हुआ। भारतीय मीडिया में तो नेतन्याहू के आगमन को लेकर छाये उल्लास और उत्साह का अनुभव किया जा सकता है, जहां आतंकवाद के विरुद्ध भारत के संघर्ष में उन्हें एक रक्षक के रूप में देखा जा रहा है। जुलाई, २०१७ में मोदी पहले भारतीय प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने इस्राइल का दौरा किया था। १९९२ में कांग्रेस शासन के दौरान ही भारत द्वारा इस्राइल से राजनयिक संबंध स्थापित करने के बाद पिछले २६ वर्षों में दोनों देशों के बीच एक घनिष्ठ सामरिक सहयोग विकसित हुआ है। दोनों के बीच व्यापार १९९२ के २० करोड़ डॉलर से बढ़कर २०१६ में ४.१६ अरब डॉलर तक पहुंच गया। एक आकलन के अनुसार दुनिया भर में आज भारत इस्राइली हथियारों का सबसे बड़ा आयातक है, जो इस्राइली हथियार विक्रय के ४१ प्रतिशत की खरीद अकेले करता है। पर इन दोनों के संबंध इससे भी बहुत आगे जाते हैं। कृषि, नवीकरणीय ऊर्जा, जल शुद्धीकरण प्रौद्योगिकी, सौर ऊर्जा, स्वास्थ्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और सबसे अहम, आतंकवाद निरोध के क्षेत्र में भी इस्राइल भारत को अपना पूरा सहयोग दे रहा है। यही वजह है कि नेतन्याहू की इस यात्रा के दौरान भी दोनों देशों के बीच कई करारों पर हस्ताक्षर किये गये हैं। फिलिस्तीन पर फिलिस्तीनियों के अधिकारों की मुखर हिमायत करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक बार कहा था, फिलिस्तीन उसी तरह अरबों का है, जिस तरह इंग्लैंड अंग्रेजों का और फ्रांस फ्रांसीसियों का। इसी विचारधारा का अनुसरण करते हुए भारत फिलिस्तीनियों के इस हक के कट्टर समर्थकों में एक रहते हुए हमेशा यह कहता रहा है कि इस्राइल के साथ हमारे घनिष्ठ होते रिश्ते कभी फिलिस्तीन के साथ हमारे ऐतिहासिक संबंधों की राह के कांटे नहीं बन सकेंगे। पर भारत में एक नये राजनीतिक पक्ष के सत्तासीन होने के साथ इस परिदृश्य में काफी परिवर्तन हुआ है। हाल के वर्षों में इस्राइल से भारत के बढ़ते रिश्तों के प्रति सड़कों पर प्रदर्शित प्रतिक्रिया तथा अतीत की असामान्यता आज के द्विपक्षीय संबंधों की सामान्यता में बदल चुकी है, वर्तमान युग वास्तविक, कठोर तथा व्यावहारिक राजनीति का है, जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों का दिशा-निर्देशक सिद्धांत बन चुका है। इसके अलावा भारतीय राजनीतिक अभिजात्यवर्ग की यह आम धारणा है कि अरब नेतृत्व ने भारत की दोस्ताना भंगिमाओं के जवाब कभी उसी तरह से नहीं दिये और बराबर पाकिस्तान का पक्ष लिया, इस्लामी देशों के संगठन में भारत द्वारा प्रवेश के प्रयास पाकिस्तानी वीटो की वजह से हमेशा नाकाम रहे, जो १९६९ में अपने सृजन के समय से ही पाकिस्तानी दबदबे का शिकार रहा है। केवल भारत के बदले हालात ही नहीं, बल्कि अरब दुनिया का बदलता सामरिक नक्शा भी इस्राइल के साथ भारत के विकसित होते संबंधों को आकार देता रहा है। कई अरब देश भी आज इस्राइल के साथ प्रगाढ़ रिश्तों के इच्छुक हैं और ईरान के विरुद्ध वर्तमान सऊदी अरब-अमेरिकी-इस्राइली त्रिगुट को आज सब जानते हैं। पिछले ही साल संयुक्त राष्ट्र की आमसभा में नेतन्याहू ने स्वयं स्वीकार किया कि इस्राइल के प्रति अरब नजरिये में तेजी से बदलाव आ रहा है। भारत में बहुतों की यह दलील है कि जब दशकों से फिलिस्तीनी हितों का पैरोकार रहा मिस्र इस्राइल के साथ अपने संबंध मजबूत कर रहा है और संयुक्त अरब अमीरात और बहरीन जैसे देश उससे रिश्ते मजबूत करने की कोशिशें कर रहे हैं, तो भारत क्यों ऐसा नहीं कर सकता, जबकि इस्राइल हमें बहुत तरह से मदद कर रहा। भारत-इस्राइल संबंधों का अर्थ केवल फिलिस्तीन के ही संदर्भ में नहीं लगाया जाना चाहिए, वरन एक और बिंदु है जिस पर दोनों देश एकमत नहीं हो सकते। भारत ईरान के प्रति इस्राइली शत्रुता कभी साझा नहीं कर सकता और उसी तरह अपनी विदेश नीति के नैतिक तत्वों तथा फिलिस्तीन के साथ अपने पुराने रिश्तों की वजह से हम वेस्ट बैंक में इस्राइली विस्तारवाद तथा गाजा की नाकेबंदी का समर्थन कभी नहीं कर सकते। भारत को अपने कदम सावधानी से बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि यह क्षेत्र अत्यंत अशांत है। जुलाई २०१७ में पीएम मोदी के इस्राइल दौरे के दौरान साइबर सुरक्षा क्षेत्र में समझौते हुए थे। इसे और व्यापक बनाये जाने को लेकर दोनों देशों ने करार किया। भारत और इस्राइल के बीच पहली बार तेल व गैस के क्षेत्र में निवेश के साथ ही शोध व विकास और स्टार्ट-अप्स को बढ़ावा देने सहित कई अन्य मुद्दों पर भी समझौता हुआ। भारत और इस्राइल संयुक्त रूप से फसल की नयी किस्मों को विकसित करने और फसल पैदा करने वाली नयी तकनीकों को आपस में साझा करने के लिए तैयार हैं। १० वर्ष पुराने इंडो-इस्राइली एग्रीकल्चर प्रोजेक्ट के तहत इसे सफल बनाने की कवायद हो रही है। भारतीय किसानों के लिए तकनीक आधारित सिंचाई की उन्नत व्यवस्था विकसित की जा रही है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

डायबिटीज में हृदय सम्बन्धी जटिलताएँ

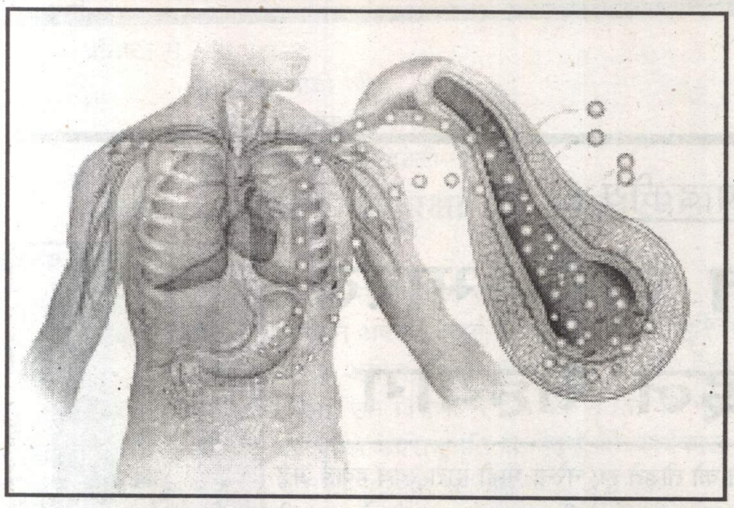

डायबिटीज का सीधा असर हार्ट पर कम देखा जाता है क्योंकि प्रकृति ने हृदय की माँसपेशियों (कार्डियक मसल्स) की रचना, कुछ इस प्रकार की है कि यह माँसपेशियाँ अपनी ऊर्जा आवश्यकता के लिए ग्लूकोज की अपेक्षा लैक्टिक एसिड और पायरूबिक एसिड पर ज्यादा निर्भर रहती है।

ऐसा देखा गया है कि जब लम्बे समय के उपवास या डायबिटीज जैसी स्थिति में शरीर की अन्य पेशियों में ग्लाइकोजन के भंडार घटने लगते हैं, तब भी हृदय पेशियों में ग्लाइकोजन की मात्रा बढ़ती जाती है। इसी तरह हृदय पेशियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले ग्लूकोज, लैक्टिक एसिड एव पायरूबिक एसिड के ऊपर इंसुलिन का कोई ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता।

यद्यपि अनियंत्रित डायबिटीज के दौरान जब हृदय से निकली धमनियों एवं हृदय की आन्तरिक धमनियों की झिल्ली के ऊपर वसा, कोलेस्ट्रॉल और कैल्शियम का मिश्रण परत–दर–परत जमने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है, तो उसके कारण उन धमनियों का आन्तरिक व्यास संकरा होने लगता है और वह धमनियाँ सख्त नलिका बनने लगती हैं। धमनियों की इस प्रक्रिया को धमनी काठिन्यीकरण (एथिरोक्लोसिस) कहा जाता है। धमनियों के काठिन्यीकरण और संकरी बनते जाने से उनमें प्रवाहित रक्त की मात्रा निरन्तर घटती जाती है। इसके फलस्वरूप उनसे संबंधित हृदय के उस भाग तक रक्त की आपूर्ति सामान्य बनी नहीं रहती। यद्यपि रक्त धमनियों के काठिन्यीकरण की यह प्रक्रिया डायबिटीज के अलावा कुछ अन्य कारणों से भी शुरू हो सकती है। लेकिन फिर भी सामान्य लोगों की तुलना में डायबिटीक पेशेन्ट की हृदय धमनी काठिन्यीकरण (कोरोनरी आर्टरी एथिरोक्लोसिस) काफी तेजी एवं अधिक संख्या में देखा जाता है।

कोरोनरी आर्टरी एथिरोक्लोसिस के लक्षण

कोरोनरी धमनियाँ जब संकरी होने लगती हैं, उनमें प्रवाहित रक्त का प्रवाह भी कमजोर पड़ने लगता है, इसके फलस्वरूप हृदय की माँसपेशियों के लिए रक्त की आपूर्ति घट जाती है एवं हृदय की कार्यक्षमता कमजोर पड़ने लगती है। ऐसी स्थिति में हृदय पर काम का बोझ बढ़ जाए, जैसे–शारीरिक श्रम करने, तेज गति से चलने, सीढ़ियाँ चढ़ने–उतरने, भारी वजन उठाने या बोझ खिंचने, गुस्से की व तनाव की स्थिति में तो हृदय में एकाएक रक्ताभाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। काम के अतिरिक्त बोझ या रक्तचाप के कारण इन रोगियों की छाती में दर्द (एन्जाइना) की शुरूआत होने लगती है इस स्थिति को एंजाइना पेक्टोरिस कहा जाता है। अध्ययनों से पता चला है कि डायबिटीज रोग के कारण विशेषकर कम आयु के इन्सुलिन आश्रित मधुमेह रोगियों में दिल का दौरा पड़ने की संभावना ३ से ६ गुना तक बढ़ जाती है। मधुमेह रोगियों में एक बार हृदयाघात का दौरा पड़ने के बाद जीवित रहने की संभावना दूसरे लोगों के मुकाबले आधी ही रहती है। बाल्यावस्था के कुछ मधुमेह रोगियों में दिल का दौरा पड़ने के स्थान पर उनमें हृदय पेशियों की सूजन देखी जाती है। इन रोगियों में हृय का आकार (Cardiomegally) बढ़ा होता है। इसके कारण रोगी में हृदय विफलता (हार्ट फेल्योर) के लक्षण जैसे–चेहरे और पैरों के ऊपर सूजन आने लगना, हृदय की धड़कन बढ़ना और साँस फूलना आदि प्रकट होते हैं।

एक सामान्यावस्था में हृदय १ मिनट में औसतन ७२ बार धड़कता है लेकिन डायबिटीज के दुष्प्रभाव जब स्नायु तंत्रिकाओं के ऊपर पड़ने लगते हैं तो स्नायु तंत्रिकाओं में सूजन (Neuritis) आने लगती है, इससे हृदय की धड़कनें अनियंत्रित होने लगती हैं। इन धड़कनों से उत्पन्न करने वाले केन्द्र (एस.वी. नोड और ए.वी. नोड) पर स्नायुओं का कोई नियंत्रण नहीं रहता, यह स्थिति कई बार रोगी के लिए घातक जानलेवा हो जाती है।

मधुमेह के दौरान हृदय सम्बन्धी जटिलताओं से बचाव

डायबिटीज के दौरान हृदय और रक्तवाहिनियों को लम्बे समय तक मधुमेह जन्य जटिलताओं से थोड़ी–सी सावधानी बरतकर काफी हद तक बचाया जा सकता है।

❖ मधुमेह और रक्तचाप (ब्लडप्रेशर) को नियंत्रित रखने के लिए आवश्यक औषधियों का नियमित सेवन किया जाना चाहिए। यद्यपि उच्च रक्तचाप और हृदय रोग में प्रयुक्त की जाने वाली कुछ दवाएँ डायबिटीज की दवाओं के साथ मेल नहीं खातीं, अतः इनके सेवन में सावधानी रखनी चाहिए व डॉक्टरों से बराबर परामर्श करते रहना चाहिए।

❖ नियमित व्यायाम से रक्त ग्लूकोज को सामान्य स्तर पर बनाए रखने में मदद मिलती है। साथ ही नियमित रूप से ३–४ किमी. की सैर, आधा–एक घंटा साइकलिंग, तैराकी, रस्सी कूदना, योगाभ्यास, प्राणायाम भी अच्छा विकल्प है। लेकिन ध्यान रखें कि रोग की गम्भीरता में ज्यादा थकाने वाला व्यायाम (तैराकी, रस्सी कूदना, साइकलिंग) न की जाए, सिर्फ योगाभ्यास व प्राणायाम और पैदल घूमने वाली कसरत ही ठीक रहती है।

❖ मधुमेह पीड़ित हृदय रोगियों को अपने आहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। ऐसे रोगियों को वसा युक्त आहार नहीं लेना, क्योंकि इससे धमनियों के काठिन्यीकरण की गति बढ़ने लगती है। वैसे वसा दो प्रकार की होती है–एक वसा वह है जो हृदय और रक्त वाहिनियों को नुकसान पहुँचाती है जैसे–(VLDL-Very Low Density Lipo Protein) और दूसरी वह है जो हृदय रोगों से बचाती है जैसे–(HDL-High Density Lipo Protein) HDL वसा गाय के देसी घी, बादाम तेल, अलसी तेल व बीज, साइमन मछली में पाई जाती है। अतः रोगी इनका सेवन कर सकता है। अन्य वसा जैसे वनस्पति शेष पृष्ठ 10 पर

जिला बुलन्दशहर से अखिल भारत हिन्दू महासभा को प्राप्त दान सूची मास दिसम्बर 2017

1.	एम० के० अरोरा, बुलन्दशहर (53वीं वर्षगाँठ पर दान)	100/-
2.	जे एन जी की 28वीं पुण्य तिथि पर दान	100/-
3.	इन्द्र देव गुलाटी द्वारा वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय 18/186, टीचर्स कॉलोनी बुलन्दशहर– 203001 (75वीं वर्षगाँठ पर दान) 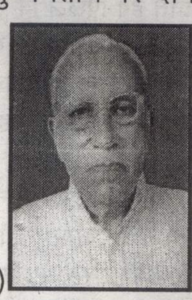	1001/-
4.	वीर सिंह 394/टीचर्स कॉलोनी बुलन्दशहर (69 वीं वर्षगाँठ पर दान)	500/-
5.	अनिल कुमार, 17/128, टीचर्स कॉलोनी बुलन्दश्हर (दान)	100/-
6.	गणेश दत्त गोयल 321, चौक बाजार, बुलन्दशहर (पौत्र के नाम करण संस्कार पर दान नाम गौरांश रखा गया)	500/-
	टोटल	2301/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

जिला बुलन्दशहर से हिन्दू सभा वार्ता का शुल्क मास दिसम्बर 2017

1.	महेश कुमार अरोरा 37/17, ज्ञान लोक कॉलोनी, गली नं० 2, टीचर्स कॉलोनी रोड़ बुलन्दशहर–203001 (नवीनीकरण शुल्क 2017-18)	150/-
2.	आर० पी० एम० महाविद्यालय, कोटा रोड़ हाथरस–204101 (आजीवन) उ०प्र०	1200/-
3.	पी० एस० एम० डिग्री कॉलेज, कन्नौज–209725 (आजीवन) उ०प्र०	1200/-
4.	महन्त राम चन्द्र गोस्वामी द्वारा शिव मन्दिर मुंशी पाड़ा, मालवीय मार्ग बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2017-18)	150/-
5.	गौरव कुमार मित्तल, नगर महामंत्री भाजपा पुत्र महावीर प्रसाद मित्तल, एडवोकेट, मोती बाग, सिविल लाईन्स, बुलन्दशहर–203001 (वार्षिक)	150/-
	टोटल	2850/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

महर्षि दयानन्द का आर्थिक चिन्तन

✍ डॉ. भवानीलाल भारतीय

वेद प्रतिपादित अर्थव्यवस्था का मनोनिवेशपूर्वक चिन्तन करने के पश्चात् उसकी व्यावहारिकता को जन सामान्य के समक्ष लाने का श्रेय भारतीय नवजागरण के पुरोधा स्वामी दयानन्द को है। उनका यह राष्ट्रीय चिन्तन उनकी राष्ट्रीय तथा राजनैतिक विचारधारा से ही सम्बद्ध था वे राजनीति और अर्थनीति में अविच्छिन्न सम्बन्ध मानते थे। यहाँ यह धातव्य है कि भारतीय वाङ्मय में अर्थशास्त्र का प्रयोग व्यापक अर्थों में हुआ है। आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य ने अपनी दिव्य मेधा से अर्थशास्त्र नामक जिस ग्रन्थ की रचना की थी वह एक साथ ही राजनीति, कूटनीति, अर्थनीति, लोकप्रशासन, न्याय–व्यवस्था, दण्डनीति आदि के पक्षों को अपने भीतर समाविष्ट किये हुए है। इसी आर्ष दृष्टि को ध्यान में रखकर दयानन्द सरस्वती ने भी अपने ग्रन्थों में सर्वत्र धर्म के साथ राजनीति (वे उसे राजधर्म कहते हैं) तथा अर्थनीति की भी विवेचना करते हैं।

स्वामी दयानन्द यद्यपि एक संन्यासी थे, जिनके लिए किसी प्रकार का सांसारिक अथवा लौकिक इति कर्तव्य शेष नहीं था। तथापि स्वदेश के लोगों की घोर दरिद्रता, कृषक वर्ग का भयंकर शोषण तथा मध्यम वर्ग के लोगों के अपार कष्टों को देखकर उन्होंने अनेक बार व्याकुलता दिखाई थी। जिस दयानन्द ने अपनी सहोदरा बहन की मृत्यु को देखकर एक बूँद आँसू नहीं गिराया वहीं गंगा तट पर उस विधवा को अपने मृत पुत्र के शव को बिना कफन नदी में प्रवाहित करते देख कर स्वनेत्रों से अजस्र अश्रुधारा प्रवाहित की थी। वह विपन्न भारत की अकिंचन विधवा अपने पुत्र की लाश को ढकने के लिए एक कफन भी नहीं जुटा सकी। उनके जीवन में अनेक ऐसे प्रसंग आये थे जब हमने देखा कि सांसारिक माया ममता से सर्वथा असंपृक्त यह निरीह, निस्संग तथा निःस्पद परिव्राजक देश की आर्थिक विपन्नता को देखकर तथा देशवासियों के सर्वविध पराभव तथा विनाश का अनुभव कर रो पड़ता था। वस्तुतः स्वामी दयानन्द ने यह अनुभव कर लिया था कि यह विदेशी शासन का ही परिणाम है कि स्वर्ण भूमि कहलाने वाला भारतवर्ष दरिद्रता, भूख, शोषण तथा विपन्नता का शिकार है।

उन्होंने देश के विगत वैभव का जो भव्य चित्र खींचा है वह अतीत को गौरवान्वित करने का प्रयास ही नहीं है, अपितु वे बतलाना चाहते हैं कि विदेशी पराधीनता ने इस देश को कितना लाचार तथा यहाँ के निवासियों को दास मनोवृत्ति वाला बना दिया है। अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में वे लिखते हैं—

पारस मणि पत्थर सुना जाता है, यह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सदा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूपी दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात धनाढ्य हो जाते हैं। (११वां समु.) भारत को आर्थिक दृष्टि से पुनः मजबूत तथा सम्पन्न देखना उनका सुखद स्वप्न था। उनकी एतद्विषयक कुछ योजनाएँ थीं जिन्हें वे क्रियान्वित करना चाहते थे किन्तु असमय में ही जीवन रज्जु के टूट जाने के कारण वे इस दिशा में कुछ नहीं कर सके। प्रथम तो उन्होंने यह अनुभव किया था कि यूरोप के औद्योगीकरण की जो लहर आई है उससे भारत भी अवश्यमेव प्रभावित होगा। उनके काल में धीमी रफ्तार से ही सही इस देश में नये कल–कारखाने स्थापित हो रहे थे। स्वामी जी की यह हार्दिक इच्छा थी कि भारत के कुछ युवकों को जर्मनी भेजा जाये, जहाँ रहकर वे पश्चिम के कला कौशल, नवउद्योग तथा नई तकनीक को सीखें तथा स्वदेश लौटकर यहाँ की आर्थिक उन्नति के ध्वज वाहक बनें। इसी विचार से उन्होंने जर्मनी के एक शिक्षाविद् तथा आर्थिक समस्याओं के विशेषज्ञ प्रो. जी. वीज से पत्राचार किया। उक्त प्रोफेसर ने उन्हें विश्वास दिलाया कि यदि स्वामीजी भारत से कुछ नौजवानों को पश्चिमी कलाकौशल सीखने के लिए वहाँ भेजेंगे तो उन्हें प्रशिक्षण दिलाने में वे सहायता करेंगे। स्वामी जी का १८८३ में निधन हो गया और यह योजना आगे नहीं बढ़ सकी।

एक ओर स्वामीजी वाणिज्य व्यवसाय तथा कल–कारखानों के सर्वाविद्य विकास के पक्षधर थे तो दूसरी ओर वे कुटीर उद्योगों के द्वारा ग्रामीण अर्थ तंत्र को भी मजबूत बनाना चाहते थे। उन्होंने गौ हत्या को बंद कराने के लिए जो महा अभियान चलाया था उसके पीछे विशुद्ध आर्थिक दृष्टि ही थी, किसी प्रकार की सस्ती भावुकता या धार्मिक भावावेश नहीं था। गाय की ही भाँति वे बैल, भैंस, बकरी आदि उन सभी पशुओं के रक्षण के हामी थे जो ग्रामीण उन्नति के आधार हैं। स्वामी जी ने कृषक वर्ग को प्रतिष्ठा दिलाई। उन्होंने लिखा है—यह बात ठीक है कि राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले हैं और राजा उनका रक्षक है। वे कृषि को भारत की आर्थिक समृद्धि का मुख्य आधार मानते थे। राजस्थान के उदयपुर, शाहपुरा तथा जोधपुर के शासकों को उपदेश देते हुए उन्होंने इस बात पर जोर दिया था कि अपनी प्रजा के हित को वे सर्वोपरि समझें तथा उस पर होने वाले अन्याय और अत्याचार को दूर करें। शाहपुराधीश राजा नाहरसिंह को तो अपने राज्य के किसानों को सिंचाई की सुविधाएँ देने तथा कृषि को उन्नत बनाने के अनेक व्यावहारिक सुझाव भी दिये थे। स्वदेश वस्तुओं के उपयोग पर जोर देना स्वामी जी की स्वराज्य साधना का एक प्रमुख बिन्दु था। वे अपने अनुयायियों को स्वदेशी तथा यहाँ पर बनी उपभोक्ता सामग्रियों को प्रयोग में लाने के लिए कहते थे। उन्हें इस बात से पीड़ा होती थी कि हमारे देश में बने जूतों को पहन कर सरकारी दफ्तरों में जाने की अनुमति नहीं है। जिस व्यक्ति के हृदय में अपने देश में बने जूतों के लिए इतना मान–सम्मान हो कि वह उसका विदेशी जूतों के मुकाबले कचहरी या दफ्तर में न जाने देने के अपमान को सहन न करता हो, उसके हृदय में व्यापक स्वदेशी भावना का अनुमान लगाना कठिन नहीं है। स्वामी जी वाणिज्य व्यवसाय में सच्चाई और ईमानदारी को सर्वोपरि मानते थे, यह उनके लघु ग्रन्थ व्यवहार भानु में उल्लिखित बाजार और ग्राहक के दृष्टान्त से स्पष्ट है। आर्थिक समस्याओं को वे कितना महत्त्व देते थे यह इस तथ्य से भी स्पष्ट होता है कि संस्कृत वाक्य प्रबोध जैसी भाषा शिक्षण की पुस्तक में भी वे व्यापार व्यवसाय पर एक प्रकरण लिखना नहीं भूले।

व्रतोत्सव प्रदर्शिका

फाल्गुन शुक्लपक्ष

व्रत, पर्व, त्यौहार (उत्सव)	तिथि	वार	दिनाँक
❖ इष्टिः प्रतिपदा	१	शुक्रवार	१६.०२.२०१८
❖ चन्द्रदर्शन मु० ३०, फुलैरादूज (अबूझमुहूर्त) श्रीरामकृष्णपरमहंस जयन्ती	२	शनिवार	१७.०२.२०१८
❖ पं० लेखरामवीर तृतीया, बसन्तऋतुप्रारम्भ, जन्मादिउस्सानी ६, र०यो०सि०सि०यो० १२:४५ से	३	रविवार	१८.०२.२०१८
❖ भद्रा १७:१६ से २६:१५ तक, अविघ्नकर व्रत, र०यो० १३:३७ तक	४	सोमवार	१६.०२.२०१८
❖ पंचक समाप्त १४:०२, राष्ट्रियफाल्गुन आरम्भ, स०सि०अ०सि०यो० १४:०२ से	५	मंगलवार	२०.०२.२०१८
❖ र०यो० १४:०० से, षष्ठी	६	बुधवार	२१.०२.२०१८
❖ भद्रा २६:२८ से, अष्ट्रवाहिका प्रारम्भ जैन, र०यो० १३:३३ से	७	वीरवार	२२.०२.२०१८
❖ भद्रा १३:३६ तक, होलाष्ट्राकारम्भः, सन्त दादूदयाल जयन्ती नरैनाधाम जयपुर, फागनिमन्त्रण नन्दगाँव, श्रीजी मन्दिर में लड्डुओं की होली	८	शुक्रवार	२३.०२.२०१८
❖ लट्ठमार होली बरसाना, स०सि०अ०यो० ११:२७ तक, रवि योग ११:२७ से	६	शनिवार	२४.०२.२०१८
❖ भद्रा ३०:५० से लट्ठमार होली नन्दगाँव चन्द्रशेखर पुण्यः रवि योग	१०	रविवार	२५.०२.२०१८
❖ भद्रा १७:२६ तक, आमला एकादशी व्रत सर्वषाम्, मेला खाटूश्याम प्रा०, लट्ठमार होली जन्मभूमि मथुरा, रामचरण स्नेही फूलडोल मेला शाहपुरा मेवाड़, र० यो० ०८:०२ तक, स०सि०यो० २६:५६ से	११	सोमवार	२६.०२.२०१८
❖ गोविन्दद्वादशी, प्रदोषव्रत, मेला खाटूश्याम जी (राज०) जयामहाद्वादशी, र०यो०, स०सि०यो० २७:५० से	१२	मंगलवार	२७.०२.२०१८
❖ राष्ट्रियविज्ञानदिवस, र०यो० २५:४४ तक,	१३	बुधवार	२८.०२.२०१८
❖ भद्रा ०८:५८ से १६:३६ तक, अन्वा, पूर्णिमाव्रत, श्री सत्यनारायण व्रत, होलिका दहन भद्रोत्तरं, नवान्नेष्टिः दारूण रात्रि, हुताशनी, मन्वादिः, वायुपरीक्षा, अष्ट्राहिका समाप्त, चैतन्यमहाप्रभुजयन्ती, होलिका निष्कासन फालेन गांव में, पूर्णिमा क्षयः	१४/१५	वीरवार	०१.०३.२०१८

अल्पसंख्यकवाद के दुष्परिणाम

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि अल्पसंख्यकवाद की राजनीति ने हमारे राष्ट्र को अभी भी दिग्भर्मित किया हुआ है। जबकि यह स्पष्ट होता आ रहा है कि अल्पसंख्यकवाद की अवधारणा अलगाववाद व आतंकवाद की अप्रत्यक्ष पोषक होने से राष्ट्र की अखण्डता व साम्प्रदायिक सौहार्द के लिये एक बड़ी चुनौती है। सन १६४७ में लाखों निर्दोषो और मासूमों की लाशों के ढेर पर हुआ अखंड भारत का विभाजन और पाकिस्तान का निर्माण इसी साम्प्रदायिक कटुता का प्रमाण था और है। आज परिस्थिति वश यह कहना भी गलत नही कि अल्पसंख्यकवाद से देश समाजिक, साम्प्रदायिक व मानसिक स्तर पर भी विभाजित होता जा रहा है। विश्व के किसी भी देश में अल्पसंख्यको को बहुसंख्यकों से अधिक अधिकार प्राप्त नही होते क्योंकि बहुसंख्यकों की उन्नति से ही देश का विकास संभव है न कि अल्पसंख्यकों के तुष्टिकरण अथवा उनके सशक्तिकरण से। अल्पसंख्यकों को सम्मान देना एक बात हैं लेकिन उनका तुष्टिकरण करना अर्थात उनकी अनुचित बातों को मानना और उनके कट्टरवाद को समर्थन देना बिल्कुल अव्यवहारिक व अनुचित है। क्या यह विरोधाभास हमको चेतावनी नही देता कि जब कभी बहुसंख्यक हिन्दुओं, उनकी सभ्यता और संस्कृति के विरुद्ध एवं उनके महापुरुषों के सम्मान के विपरीत कहा जाय तो स्वीकार्य है परंतु यदि कोई प्रश्न या प्रकरण अल्पसंख्यकों की वास्तविकता से जुड़ा हो, उनके मुल्ला– मौलवियों से जुड़ा हो या उनकी विद्याओं और पैगम्बर से संबंधित हो तो उसे सार्वजनिक जीवन की मर्यादा के विरुद्ध घोषित करके अपराधी बनाने के लिए सारे यत्न किये जाते है?

हमारे देश की संविधानिक विडंबना भी यह है कि अल्पसंख्यक कहे जाने वाले मुसलमान आदि अपने धार्मिक व नागरिक दोहरे अधिकारों से लाभान्वित होते आ रहें है, जबकि संविधान के अनुच्छेद २५ से ३० में बहुसंख्यक हिदुओं को उनके शिक्षा संबंधित धार्मिक अधिकारों से वंचित रखा हुआ है। इस प्रकार किसी धर्मनिरपेक्ष देश में धर्म आधारित अल्पसंख्यको व बहुसंख्यको में भेदभाव करना क्या सर्वथा अनुचित नही है? ध्यान रहें कि विश्व में कही भी अल्पसंख्यकों के अनुसार कानून नहीं बनाये जाते। वहां के कानून बहुसंख्यक भूमि पुत्रो के धार्मिक रीति–रिवाजों व संस्कृति पर आधारित होते है । इन्ही कानूनों के अनुसार अल्पसंख्यकों को अपने रीति रिवाजों को अपनाते हुए वहां के मूल निवासियों के साथ मिलजुल कर रहना होता है। इसीलिये अल्पसंख्यक कौन और क्यों पर एक बड़ी बहस आज अत्यंत आवश्यक हो गयी है। दशकों से अल्पसंख्यकवाद की राजनीति ने हमारे राष्ट्र को कर्तव्यविमुख कर दिया है। इसलिए जो कट्टरवाद के समर्थक है और अलगाववाद व आतंक को कुप्रोत्साहित करते है उन्हें दंड़ित करने में भी अनेक समस्यायें आ जाती है। वर्षो से आई.एस.आई. व अन्य आतंकवादी संगठनों ने अपने स्थानीय सम्पर्को से मिल कर सारे देश में देशद्रोहियों का जाल फैला रखा है। जिसके कारण देश के अधिकांश नगरो और कस्बो में आतकियों के अड्डे मिले तो कोई आश्चर्य नहीं होगा? अल्पसंख्यकवाद की राजनीति ने केवल राजनीतिज्ञों को ही पथभ्रष्ट नहीं किया बल्कि राष्ट्र का चेतन समाज भी पथभ्रष्ट होता जा रहा है। राष्ट्रवाद व हिंदुत्व की निंदा को हम पंथ–धर्म निरपेक्षता मानने लगे है। हम बहुसंख्यक हिन्दू आत्मनिन्दा करते हुए थकते ही नहीं, एक भयानक स्थिति बन चुकी है। आज हिंदुत्व विरोध को प्रगतिशीलता और आतंकवाद के विरोध को साम्प्रदायिकता समझने की आम धारणा बन गई है। जिस बंग्लादेशी मुस्लिम आदि घुसपैठ को सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्र पर आक्रमण माना था उसे न केवल यथावत जारी रहने दिया गया, बल्कि उसका विरोध करने वालों को सांप्रदायिक माना जाने लगा। वही प्रवृति देश की बर्बादी के नारे लगाने वालों को देशद्रोही कहना तथाकथित बुद्धिजीवियों व सेक्युलर नेताओं को अस्वस्थ बना देती है। और इसी अल्पसंख्यकवाद का दुष्परिणाम है कि प्रखर राष्ट्रवाद को हिन्दू कट्टरवाद व साम्प्रदायिक कहा जाने लगा है । अल्पसंख्यकवाद के पोषण से हमारी वसुधैवकुटुंब्कम की संस्कृति व सर्व धर्म समभाव की धारणा निरंतर आहत हो रही है। निसंदेह हमारी संस्कृति किसी से बदला लेने या उस पर आक्रामक होने की नहीं है, फिर भी हम आतंकवादियों और कट्टरपंथियों को संरक्षण देने वालों को देश का शुभचिंतक नहीं मान सकते? आक्रान्ताओं की जिहादी संस्कृति जो मानवता विरोधी है और विश्व शांति के लिए एक भयंकर चुनौती है, समाज में अलगाववाद का विष ही घोल रही है। अतः राष्ट्रीय सुरक्षा व विकास के लिए अति अल्पसंख्यकवाद से सावधान रहना चाहिये। यह सत्य है कि भूमि पुत्र बहुसंख्यकों की अवहेलना करके कोई राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता।

यह विचित्र है कि आज इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में समर्पित राजनीतिज्ञ, सामाजिक व धार्मिक नेता अलग–थलग पड़ते जा रहें है। आधुनिकता की चकाचौंध ने सभी को राष्ट्रनीति के स्थान पर राजनीति के चक्रव्यूह में फंसा दिया है। जिससे अल्पसंख्यकवाद की पोषित राजनीति ने राष्ट्र को अपने मानवीय मूल्यों, नैतिक आधारो, धर्म व संस्कृति आदि को ही धीरे धीरे तिलांजलि देने को विवश कर दिया है। मुस्लिम पोषित राजनीति का पर्याय बन चुका अल्पसंख्यकवाद आज अपनी एकजुट वोटो के सहारे भारत ही नही सारे संसार में जहां जहां लोकतंत्र है वहां वहां अपनी संख्या के बल पर प्रभावी होता जा रहा है। आज जब विश्व मे इन जिहादियों के वीभत्स अत्याचारो से सारी मानवता त्राहि–त्राहि कर रही है, फिर भी विश्व के अनेक शक्तिशाली नेता धैर्य रखो और देखते रहो की नीतियों पर चलना चाहते है। अनेक गणमान्य लोगों का मानना है कि इन कट्टरपंथी मुसलमानों का सर्वमान्य एक ही लक्ष्य है दारुल–इस्लाम अतः इनकी कितनी ही उदार सहायता करते रहो फिर भी इनकी अनन्त मांगे कभी पूरी नहीं होंगी। इनकी स्पष्ट मान्यता है कि जब तक इस्लाम है तब तक जिहाद रुकेगा नही और जो विश्व के इस्लामीकरण से कम में संतुष्ट होने वाला नहीं है। इसके लिए बगदादी और जाकिर नाईक जैसे इस्लाम के हजारों प्रवर्तक वर्षो से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से सक्रिय है। तटस्थ रहकर विचार करना होगा कि इस्लामिक जिहाद से त्रस्त भारत सहित विश्व के अनेक देश इस नफरत व घृणास्पद वैचारिक जड़ता को मिटाने के लिए मुस्लिम कट्टरपंथियों की कितनी ही आर्थिक व समाजिक सहायता करते रहें, फिर भी क्या वे उस राष्ट्र की मुख्य धारा से कभी जुड़ेंगे? साथ ही इन कट्टरपंथी जिहादियों को सुरक्षा एजेंसियों के भरोसे भी नियंत्रित नहीं किया जा सकता। अतः मानवता की रक्षा के लिए अल्पसंख्यक मुसलमानों का अतिरिक्त पोषण बंद करना होगा और इनकी शिक्षाओ व दर्शन में आवश्यक संशोधन करवाने होंगे।

दान/सहयोग सहायता द्वारा इन्द्रदेव, बुलन्दशहर माह कार्तिक विक्रमी सम्वत् २०७४ (अक्टूबर-नवम्बर)

1.	हिन्दू सभावार्ता, नई दिल्ली	2700/-
2.	हिन्दू महासभा, नई दिल्ली	151/-
3.	राष्ट्रीय कोहिनूर, एटा	1000/-
4.	दि मॉरल, कानपुर	500/-

माह मार्गशीर्ष सम्वत् २०७४ (नवम्बर-दिसम्बर)

5.	हिन्दू सभा वार्ता, नई दिल्ली	2700/-
6.	अखिल भारत हिन्दू महासभा, नई दिल्ली	652/-
7.	वतन के सिपाही (मासिक) करनाल	300/-
8.	ब्राहमण अंतरराष्ट्रीय समाचार (मासिक) बिजनौर	350/-
9.	अग्रवाल–संदेश (मासिक) अलीगढ़	200/-
10.	दि मॉरल (साप्ताहिक) कानपुर	500/-
	टोटल	9053/-

इन्द्रदेव गुलाटी, संस्थापक, सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

आयोवा-स्थित वर्जीनिया विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ अमरेन्द्र मिश्र की शर्मसार करने वाली स्वीकारोक्ति

हरिकृष्ण निगम

यह सत्य कथा एक गोरी चमड़ी वाली, स्वाभिमानी, रंगभेद में विश्वास करने वाली उत्तर प्रदेश में जन्मे व पले अमरेन्द्र मिश्र नामक वर्जीनिया में रहने वाले उस भारतीय गणितज्ञ की तीन पीढ़ियों की शर्मसार करने वाली स्वीकारोक्ति भरी ऐसी गाथा है जो उनके सारे परिवार को यावज्जीवन हिन्दू बोलने वाला गँवारू 'काले' पति की तरह देखती रही जो कभी 'सुधर' नहीं सका। उनकी यह कहानी समाप्त नहीं हुई क्योंकि इस विश्वविख्यात गणितज्ञ को 'आयोवा' में एक महोत्सव में साहित्य व कविता के एक ग्रंथ के लिए जो हिन्दी में है अमेरिका में गणितज्ञों में एक अभूत पूर्व समारोह में सर्वोत्कृष्ट कृति के लिए सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनकी अमेरिकन पत्नी की उपस्थिति में दिया गया जो उनके समस्त परिवार की उपस्थिति में दिया गया जब कि वे खुलकर उनके विख्यात गणितज्ञों के दो पीढ़ी के सदस्यों के उस कीर्तिमान के लिए दिया गया जो अमेरिकी नागरिकों के बीच हिन्दी के पठन–पाठन के लिए था। लगभग अर्धशती तक, अमेरिका वासी मात्र इसलिए एक प्रयाग एवं वाराणसी क्षेत्र की मिट्टी से जुड़ा सम्पन्न प्रतिभाशाली कुटुम्ब इसलिए अमेरिकी काकेशिसन मूल की खलबली की प्रतारणा स्वीकार

अपने 'हिन्दू व हिन्दी भाषी' पहचान को छिपाकर करता रहा– यह सब अविश्वसनीय सा लगता है इस आख्यान का महत्व भारतवासियों के लिए भी है क्योंकि कदाचित पिछली सदी के महान गणितज्ञ श्री निवास रामानुजम जिनकी अल्पायु में मृत्यु हो गई थी उसके बाद पश्चिमी विश्व में यदि किसी की इतनी चर्चा हुई तो स्वेच्छा से अभिशप्त बने वर्जीनिया के गणितज्ञ अमरेन्द्र मिश्र ही रहे हैं। हाल में इसी बीते सन् २०१७ में यश व कीर्ति के धनी अमेरिका–स्थित व्याख्याता अमरेन्द्र मिश्र व अमेरिका के आयोवा में ही साथ रहने वाले दो अन्य भाई व जो गणित के साथ–साथ सांख्यिकी और हिन्दी और संस्कृत साहित्य में निष्णात एक ही कुटुम्ब के वेदज्ञ व कर्मकाण्डी ब्राह्मण के रूप एक साथ रहते हुए भी अमरेन्द्र मिश्र की पूरी तरह अमेरिकी व पाश्चात्य वेशभूषा व खानपान में ढली किसी तरह अपनी हिन्दू व कर्मकाण्डी पहचान को छिपाकर रखते थे। अमरेन्द्र मिश्र की श्वेत मूल की अमेरिकी पत्नी व उसके पूर्व अमेरिकी पति से जन्में एक पुत्र को एक ऐसे आच्छादन से ढंका गया था जो उसको कथित "हिन्दू पिछड़ेपन व धार्मिक पोंगापन के प्रपंचों से दूर रखता था और वे अपनी आर्थिक सम्पन्नता से उनकी मनचाही जीवन शैली को बरकरार रख सका था।

ऐसी स्थिति में एक चौंकाने वाली अविश्वसनीय घटना होने वाली थी। वर्जीनिया विश्वविद्यालय के आयोवा स्थित प्रेक्षागृह में आयोजित एक महोत्सव में अमरेन्द्र मिश्र के लिए विशिष्ट पुरस्कार– सम्मान देने के लिए आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता के लिए उसकी ही पत्नी को चुना गया जो स्वयं एक विख्यात गणितज्ञ थी। श्वेत अमेरिकी पत्नी अब तक इस समारो के उद्देश्य से अनभिज्ञ थी।

इतना तो पहले से ही अमेरिका का विद्वतवर्ग जानता था कि अमरेन्द्र मिश्र पिछली शदी के युवा भारतीय प्रतिभा श्री निवास रामानुज में जिनका अल्पायु में देहावसान हो गया था या पूर्व शंकराचार्य भारतीय तीर्थ जी के वैदिक गणित के चमत्कारों भरा कम्प्यूटर की द्रुतगति को मात करने वाला जटिल हल वैदिक गणित के सूत्रों से हल कर सकते थे (जिसका प्रदर्शन शकुन्तला देवी विश्व भर में अपने समय में कर चुकी थी) उसी परम्परा को बढ़ा रहे थे।

अमेरिकी पत्नी के यह अचम्भित करने वाली बात थी कि अपने भारतीय पति को पुरस्कार या सम्मान उसके हाथों ही मिलना था पर वह यह जानकर भौंचक रह गई कि उनके शिष्य या गणित की छात्र–मण्डली यह सम्मान उनकी हिन्दी की एक काव्य–पुस्तक जिसका अंग्रेजी अनुवाद भी संलग्न था तथा उनकी हिन्दी के पठन–पाठन व अध्ययन के लिए दे रहे थे। उनका चेहरा तमतमा उठा और उस पर अपार घृणा व वितृष्णा की लहर उठने लगी। उपस्थित लोगों की प्रतिक्रिया की परवाह किए बिना वह उन्हें भला बुरा कहने लगी और उपशब्दों की बौछार के साथ उन्हें तलाक देकर छोड़ने की भी घोषणा करने लगी। अमरेन्द्र मिश्रा क्षमा–याचना की मुद्रा में रहे पर पत्नी पर कोई असर नहीं पड़ा। अपनी सनातनी ब्राह्मण दिनचर्या व कर्मकाण्डों से भरी दिनचर्या या वाराणसी अथवा प्रयाग की गंगातट व संगम की दिनचर्या की स्मृतियों को यद्यपि उन्होंने अपनी हिन्दी रचनाओं के संकलन में संजोया था व अमेरिका छात्रों के साथ संवाद स्थापित करने का यत्न किया था पर अपनी पत्नी के आगे वे हताश और निस्सहाय थे। कहते हैं कि अपनी अब तक की चुप्पी के कारण उन्होंने अपने अस्तित्व की ही पराजय मान ली। हमारे केन्द्रीय स्कूलों के हिन्दी के पाठ्यक्रम में उपर्युक्त घटना एक संकलित रचना के रूप में संकलित है। उनकी स्वीकारोक्ति से यह निष्कर्ष निकलता है कि 'गोरी चमड़ी वाली अमेरिकी पत्नी के आगे एक सफल व प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक व उसके परिजन यश व समृद्धि लोलुपता के चक्कर में यावज्जीवन किस तरह नतमस्तक होकर अपने आदर्शो से खिलवाड़ कर सकता है।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक ही थे राष्ट्रद्रोही- हिंदू महासभा

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में आतंकी का मिलना कोई नई बात नहीं है हिंदू महासभा हमेशा से यह कहती रही है कि यह विश्वविद्यालय आतंकी एवं राष्ट्रद्रोहियों का शरणस्थली बना हूआ है। स्थानीय प्रशासन एवं खुफिया तंत्र गंभीरता से नहीं ले रहा था परिणाम आज सबके सामने है। वास्तविकता यह है कि यदि यहां से निकले सभी मेधावी मुस्लिम छात्रों पर सर्वे किया जाए तो कहीं ना कहीं वह आतंक को सहयोग पहुंचा रहे होंगे, अतः हिंदू महासभा केंद्र सरकार से मांग करती है अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से पढ़े हुए मुस्लिम छात्र यदि गृह मंत्रालय अथवा रक्षा मंत्रालय में कहीं तैनात हैं तो उन पर कड़ी निगरानी की जाए ।

जब पेड़ ही बबूल का लगा होगा तो उस पर कांटे के ही फल लगेंगे यह बात चरितार्थ होती है सर सैयद अहमद खान ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना देश में भाईचारा समाप्त करने मुसलमानों को भारत के खिलाफ लड़ाने हिंदू विरोधी मानसिकता को बढ़ाने के लिए ही की थी पहले दिन से ही यह विश्वविद्यालय देशद्रोहियों की पाठशाला रहा है। यहीं पर भारत विभाजन की नींव रखी गई जो पाकिस्तान के रूप में सामने आई, आजादी के बाद इस विश्वविद्यालय में ताला लगना चाहिए था पर कांग्रेस ने नहीं लगने दिया। यह विश्वविद्यालय सदैव से आतंक की प्रयोगशाला रहा है। सिमी जैसे आतंकी संगठन का यहां गठन हुआ आज भी यहां लगातार भारत विरोधी नारे बुलंद हो रहे हैं ,देश के गद्दारों को यहां सम्मानित किया जाता है, वंदे मातरम गाने पर प्रतिबंध है, भारत तेरे टुकड़े होंगे हजार जैसे गीत गाए जा रहे हैं। स्पष्ट है कि भारत की जनता का खून पसीने की कमाई से दिए गए टैक्स से चलने वाला यह विश्वविद्यालय आतंक को पाल रहा है। सरकार को चाहिए इस विश्वविद्यालय को मिलने वाली आर्थिक सहायता तत्काल प्रभाव से बंद कर दी जाए। यहां के छात्र पूरे देश में आतंक अलगाववाद पैदा कर रहे हैं यदि इस विश्वविद्यालय पर जल्द लगाम न लगाई गई तो परिणाम और भयंकर होंगे। यह बात आज अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के खिलाफ प्रदर्शन में राष्ट्रीय प्रवक्ता अशोक पांडे ने कहीं। पुतला फूंकने वालों में प्रमुख रुप से हरिशंकर शर्मा, कुंज मिश्रा, बबलू शर्मा, जयवीर शर्मा, जितेंद्र पाल सिंह बघेल, मनोज सैनी, गौरव पंडित, प्रदीप उपाध्याय, ओपी सिंह, बबलू गुप्ता, रवि गोस्वामी, श्रीकांत गोस्वामी आदि दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पुणे का शनिवारवाड़ा

✍ रमेश जि. नेवसे

(शेष पिछले अंक का)

अपने वर्णन में मेजर प्राईस आगे लिखता है। बाद में हम बाये मुडे और सीधे राजदरबार में जा रूके। यह राजदरबार का हॉल था। यह हॉल भव्य और प्रशस्त लंबा तथा चौडा था। उसकी उंचाई अधिक थी। लेकिन वहाँ कलाकारी या चित्रकारी विशेष रुप से देखने को नहीं मिली। लकडी के उपर बनवाई गयी नक्काशी थोडीसी थी। इस हॉल की उत्तर दिशा में खुली जगह रखी थी। वहाँ बासँ के जालीदार पर्दे लगाये हुये थे। इस हॉल के खंभे उंचे उंचे थे। जमीनपर खुबसुरत कालीन बिछी हुयी थी। उसपर सफेद चादरे डाली गयी थी।

सन् १७८६ में कैप्टन मूर नामक अधिकारी ने अपने डायरी में गणेश महाल के बारे में लिखा था। पेशवे का 'गणेश रंगमहल' बहुत सुंदर और भव्य है। वहाँ तरह तरह के लोग रोज मिलने और राजपाट के कारोबार लिये आते है। इस महल में एकसाथ सौ सो अधिक नर्तकियाँ एक साथ नृत्य करके मनोरंजन करती थी। और ऐसे मनोरंजन के खेल मैंने बहुत बारे देखे हैं। इस महल के एक कोने में गणेशजी की संगमरमरकी बडी प्रतिमा बिठाई गई है। महलो की दिवारो पर पौराणिक संदर्भ बतानेवाले सुंदर चित्र बनवाये है। इस महल के एक बाजू में पानीका हौज था। उसमे पानी के फव्वारे हमेशा नाचते है। उसके बाजू में फुलवारी है। सारा माहौल आखों के लिये एक नजारा है। मन को प्रसन्न करता है।

शनिवारवाडे में जितने ही महल थे। उनमें विविध प्रकार के चिरागदान, तारण, चित्रकारी, लकडी के उपर हर जगह की गयी नक्काशी, विविधता पूर्ण रंगकाम किया हुआ था। स्थान स्थान पर पानी के फव्वारे बनाये हुये थे, जो मनकी प्रसन्नता बढ़ाते थ।

सवाई माधवराव ने कुल ३१ साल पेशवे पदका कार्यभार संभाला था। उनकी आकस्मिक मृत्यू से मराठा सल्तनत को भारी सदमा पहुँचा था। उन्ही के कार्यकाल में मराठा राज्य की सीमाएँ विस्तृत हुआ। दूरतक फैली। राज्य में शांति का अम्मल था। सवाई माधवराव को बदकिस्मती से कोई संतान नही थी। उनकी आत्महत्या से राजकारणी, मददगारो के सामने और सलाहकारोके सामने अब नया पेशवा कौन? यह समस्या खडी हुयी। पेशवेपद के लिये किसे गोद लिया जाएगा? इसकी खुलेआम चर्चा होने लगी। गोद लेने का प्रस्ताव पेशवा के दिवाण नाना फडणवीस का था। वैसा देखा जायें तो रघुनाथराव याने राघोबादादा के बडे बेटे बाजीराव, जिन्हे इतिहास में भगोडे बाजीराव के नाम से जाना जाता है। वे पेशवेपद के लिय अपने पिता की

तरह उत्सुक थे। और इस दिशा में वे राजनीति की चाले चल रहे थे। लेकिन वास्तव में यह दुसरा बाजीराव ना तो राजनीति से वाकीफ था, ना तलवारबाजी से। वह तो मुगल शहजादों की तरह ऐयाशीमे दिन गुजारता था।

नाना की और राघोबादादा की दुश्मनी थी। पहले माधवराव के कार्यकाल से ही राघोबादादा पेशवे पद के लिये उत्सुक थे। और वो उस दिशामे प्रयास भी कर रहे थे। अपयश आने के बाद उन्होने माधवराव के साथ युद्ध भी किया था। उस में उनकी बुरी तरह हार हुयी थी और उन्हे माधवराव के साथ युद्ध भी किया था। उस में उनकी बुरी तरह हार हुयी थी और उन्हे माधवराव पेशवे के कैदी बनकर शनिवारवाडे के कैदखाने में रहना पडा था। लेकिन वहाँ से उन्होने भाग जानेकी कोशिश की इसलिये उन्हे किलेपर रखा गया था और साथ में दूसरे बाजीराव को भी। नाना को इन बापबेटो से पुरी नफरत थी। क्योंकि पेशवेपद के लिये जो गुण चाहिये थे वे गुण और कार्यकुशलता इन बापबेटो में नही थे। भट घरानेकी औलाद होने के नाते व पेशवेपद की अभिलाषा धर बैठे थे। इसलिये दुसरे बाजीरावद्वारा पेशवेपद की लालसा में होनेवाले सारे प्रयासो पर नाना अपनी राजनैतिक चाल से पानी फेरकर उनके मनसुबे की धज्जिया उडाता था। नाना को टक्कर देना दिनबदिन दुसरे बाजीरावको मुश्किल हो रहा था। क्योकि नाना के हाथ मे पेशवे के दिवान होने के नाते मराठा सता का पुरा अधिकार था।

इसी बीच गोद लेने की रस्मद्वारा नाना फडणवीस अपनी पसंदका पेशवा चुनना चाहता था। उसने सलाहकारके साथ इस मुद्देपर मशवरा किया था। चर्चा की थी। इसलिए उसने सर्व संमतीसे राघोबादादाके दुसरे पुत्र और दुसरे बाजीराव के छोटे भाई चिमणाजी ऊर्फ आप्पासाहब को उसने २४ मई १७९६ के दिन सवाई माधवराव की बेवा पत्नी यशोदाबाई की गादमे बिठाया और धार्मिक कार्य पुरा किया। उसी दिन चिमणाजी को पेशवा घोषित किया गया। दुसरे बाजीराव ने नाना की इस चाल का विरोध किया। क्योकि उसी वंश में बाजीराव जैसे बडा लडका होते हुये भी नाना ने छोटे लडके को पेशवा घोषित किया। सत्ता का अधिकार रिवाज और परंपरा से बडे भाईका ही होता है। जब तक बडा लडका जिवीत हो, तब तक छोटे भाई को तख्तोताज का अधिकार नही मिलता है।

इस परंपरा को नाना ने दुसरे बाजीराव के प्रती नफरत होने के कारण तोडा था। परंपरा का आधार लेकर, पैसा दबाकर बाजीराव ने पुणे के ब्राह्मणो को इस गोद प्रकरण के खिलाफ भडकाया। उसने यहाँ तक कहाँ कि नाते के हिसाब से चिमणाजी रिश्ते में यशोदाबाई के चचरे ससुरजी लगते है। ससुरजी को गोद लेना धर्म विरोधी कृत्य है। इसलिये ये दत्तक विधान पुणे के ब्राह्मणो ने मंजूर नही किया।

बाजीराव ने इस मौके का फायदा उठाने के लिये, नाना गुट के बडे बडे सरदारो को पैसे की लालच दिखाया। पेशवा बनने के बाद उन्हे मालामाल कर देने के आश्वासन दिये। पैसे के लालच में और स्वार्थ के कारण, नाना गुट के अनेक सरदार बाजीरावसे मिलने लगे। नाना के ध्यान में कुछ कुछ बाते आने लगी। अपने दिवान पद को संभाले रखने के लिये उसने नगर के कैदखाने मे रखे हुये बाजीराव को मुक्त किया। शिंदे, होलकर जैसे सरदारो के साथ हाथ मिलाकर मराठा राज्य के लिये दूसरे बाजीराव को पेशवे के गद्दीपर बिठाया। ५ दिसंबर १७९६ के दिन दूसरा बाजीराव विधीवत पेशवा बना।

अधिकृत पेशवापद हासिल करने के बाद और सातारा के छत्रपती महाराज ने उन्हे पेशवेपद का अधिकार देने के बाद बाजीराव ने मुगलों की दमन और बदले की नीती का अवलंब शुरू किया। राजपाट का उसे कोई अनुभव नही था। गद्दीपर बैठते ही उसने नामी ब्राह्मणो की सहायतासे चिमणाजी का किया हुआ, गोद लिया हुआ दतक विधान रद्द कर दिया। अब चिमणाजी सिर्फ राघोबादादा के छोटे पुत्र और बाजीराव के छोटे भाई कहलाने लगे। पेशवे पद का उनका अधिकार छिन लिया गया था। नाना के इस षडयंत्र में हिस्सा लेने वाली सवाई माधवराव की बेवा पत्नी को कैद करके बाजीराव ने सूडचक्र को गती देना शुरू किया।

सवाई माधवराव की पत्नी के नाते शनिवारवाडे में शान से पेशवेबाई के रूप से रहने वाली यशोदाबाई को नियती ने एक झटके में कैदी बनाया। आम कैदियो साथ उसे रखा गया, उन्हे जो खाना दिया जाता था वही यशोदाबाई को मिलता था। जिन दासदासियोपर उसने हुकमत चलायी थी उन्ही के सामने उस बाजीराव के कारण अपमानीत होना पडा था।

यशोदाबाई को शनिवारवाडे में कैदी बनाके रखना दूसरे बाजीराव को संकट जैसा लगा। क्योंकि बाजीराव नाना फडणवीस से बहुत डरता था। नाना कुछ भी चाल खेलकर यशोदाबाई को मुक्त करके नया संकट पैदा कर सकता था। नाना कुछ भी चाल खेलकर यशोदाबाई को मुक्त करके नया संकट पैदा कर सकता था। इस डर से बाजीराव ने यशोदाबाई को पुरंदर किलेपर कैद करके रखा। लेकिन बाजीराव का डर कम नही हुआ, उसने उसे छत्रपती शिवाजी महाराज की राजधानी रायगड किलेपर भेजा। वहा उसे आम कैदी जैसा जीवन बिताना पडा। यशोदाबाई को रायगड किलेपर दगाबाजी से कत्ल करने का प्रयास हुआ। लेकिन नसिब से वह बाल बाल बची। लेकिन ई.स. १८६१ में अपने नसीबका खेल देखते देखते उसने अपने आपको मृत्यू के हवाले कर दिया। उसके निधन के साथ भट धराने की, बालाजी विश्वनाथ पेशवे से चली आयी बडे घराने की पेशवेपद की परम्परा नष्ट हुआ। बडे घरानेका निर्वंश हुआ।

दूसरा बाजीराव अत्याचारी और कपटी, जालसाजी था। बुद्धिमान, प्रतिभाशाली और राजनीति में माहिर नाना फड़नवीस उसके याने बाजीराव के बुरे कारनामों को और जालसाजी में रोड़े अटकाने लगा था। इसलिए बाजीराव ने नाना को दिवान पद से हटाकर उसे कैद करके उसे नगर के किले में भेज दिया। उसकी सारी संपत्ति जब्त कर दी गयी। एक साल तक नाना बाजीराव का कैदी बना रहा। बाजीराव को राजपाट में दरबार, हर निर्णय पर मार खानी पड़ने लगी। अंग्रेज जैसे शत्रु कभी मराठा राज्य का दीया बुझा सकते थे। जब तक नाना था, तब तक अंग्रेजों की सभी चालें नाना ने नाकाम कर रखी थीं। बाजीव को पैसा इकट्ठा करना भी नहीं आता था। साथ में उसे ऐयाशी की बीमारी थी। मुगलों जैसा उसका बर्ताव था। औरतों के साथ गुलछर्रे उड़ाने का वह आदी था।

(शेष अगले अंक में)

देश विभाजन का खूनी इतिहास

(१९४६–४७ की क्रूरतम घटनाओं का संकलन)

लॉर्ड लुइस माउन्टबेटेन ने २२ जुलाई १९४७ को लाहौर की यात्रा का और पूर्वी पंजाब की अधीनस्थ सरकार का मुख्यालय किसी संभावना या सतर्कता के उपाय के तहत शिमला ले जाने का निर्देश दिया। साथ ही उन्होंने लाहौरवासियों को यह भी आश्वस्त किया कि यह अंतिम निर्णय नहीं है, शिमला पंजाब की ग्रीष्मकालीन राजधानी है और यदि लाहौर भारत के हिस्से में पड़ता है तो सरकार बिना विशेष असुविधा के पुनः वापस आ सकती है। इस बीच एक सीमा बल का गठन किया जाएगा। जो सभी समुदाय के लोगों की जान–माल की सुरक्षा करेगा। वॉयसराय की घोषणा से मुसलमानों को विश्वास उपजा कि यह लाहौर को पाकिस्तान में शामिल करने का संकेत है। गैर मुसलमानों को इससे भयंकर आघात पहुँचा, क्योंकि सीमांकन आयोग से उनकी आशा बंधी हुई थी। संबंधित व्यवस्थाओं के अनुसार दोनों देशों के सीमांकन का काम जनसंख्या की बहुतलता वाले क्षेत्रों के आधार पर किया जाना था।

लेकिन अन्य पहलुओं पर भी विचार किया जाना था। स्वाभाविक था कि गैर मुसलमानों ने अन्य पहलुओं में वित्तीय, आर्थिक, सुविधा और सामाजिक हितों को समझा लाहौर का निर्माण गैर मुस्लिम पूँजी और उद्योग से ही हुआ था। लाहौर की ८० प्रतिशत सम्पत्ति गैर मुसलमानों की थी और शहर का सामाजिक जीवन हिन्दुओं–सिखों के आसपास ही केन्द्रित था। चेनाब न भी हो, तो कम से कम रावी को अवश्य ही भौगोलिक कारणों और सुविधा को ध्यान में रखते हुए एकमात्र सुसंगत सीमा रेखा होना चाहिए था। गैर मुसलमान इस बात को ध्यान में रखकर खुश थे कि पाकिस्तान का दावा सिर्फ जनगणना के आधार पर होने के कारण कमजोर है और मान्य होने योग्य नहीं है। शिमला स्थानांतरित करने के वॉयसराय के निर्देश ने इन आशाओं को छिन्न–भिन्न कर दिया। बहुत से गैर मुसलमानों ने सोचा कि उन्हें तत्काल या भविष्य में कुछ बाद भारत में जाकर रहना पड़ेगा। कुछ लोग वैसे भी थे जो सोचते थे कि एक बार स्वतंत्र राज्य के रूप में पाकिस्तान की स्थापना और मान्यता प्राप्त हो जाने के बाद शांतिपूर्ण परिस्थिति कायम होगी और सभी समुदाय के लोग बिना बाधा और अपमान के अपनी आस्था और विश्वास के अनुसार जीवन निर्वाह कर सकेंगे। सीमा बल के गठन के प्रस्ताव से उन्हें बहुत चैन मिला क्योंकि उन्होंने सोचा कि किसी कीमत पर सेना किसी का पक्ष नहीं लेगी और पूरी निष्पक्षता से कानून और व्यवस्था स्थापित करेगी। दुर्भाग्य से ये आशायें सच नहीं निकलीं।

शिमला में सर साइरिल रैडक्लिफ से विचार–विमर्श के बाद

आयोग के कुछ सदस्य ८ अगस्त को लाहौर वापस आए। अगले दिन, पूरे लाहौर में कुछ मुस्लिम संघों द्वारा जारी दावे के साथ कुछ पोस्टरों को प्रस्तुत किया गया। उनमें घोषित किया गया था कि यदि लाहौर भारत को दिया जाता है, लाहौर के मुसलमान सीमा आयोग की संस्तुतियों को स्वीकार नहीं करेंगे और शहर को बलपूर्वक अपने अधीन ले लेंगे। १०–११ अगस्त की रात में शहर की अधिकांश मस्जिदों में बैठकें हुई और गैर मुसलमानों पर निर्मम आक्रमण हेतु मुसलमानों का आह्वान किया गया। ११ अगस्त की सुबह लाहौर में सामान्यतः यह आभास हुआ कि गैर मुसलमानों के लिए वहाँ रह पाना बहुत जल्दी ही असंभव हो जाएगा। कुछ मुसलमानों ने गैर मुस्लिम मित्रों को सचेत किया और तुरंत शहर छोड़कर चले जाने की सलाह दी। ११ अगस्त को एकदम सवेरे ही शहर में गड़बड़ी शुरू हो गई और अगले दिनों में पूरे शहर और छावनी इलाके में फैल गई। खरासियां मुहल्ला में नेशनल गार्ड्स और एक सब–इंस्पेक्टर ऑफ पुलिस के नेतृत्व में पाँच सौ हथियार बंद मुसलमानों द्वारा आक्रमण किया गया। सरीन मुहल्ला में दो पहर बाद धावा बोला गया। शहर के अधिकतर हिस्सों में आग लगाने की घटनाएँ हुई और शाम तक सिविल लाइंस के निवासियों ने आसमान में उठती हुई आग की लपटें और धुएँ की दीवारें देखीं। बंदूकें, पिस्तौल, भाले, गंडासे और लाठियाँ लिए हुए मुसलमानों के झुंड के झुंड, दिन भर, गैर मुसलमानों पर आक्रमण करते और उनकी दुकानों और घरों में आग लगाते हुए शहर की सड़कों पर घूमते रहे। गैर मुस्लिम लोग अपने घरों में बंद थे। उनमें कुछ लोगों को बदमाशों द्वारा खींच कर बाहर लाया जाता था और काट डाला जाता था। सरकारी संवाद के अनुसार उस दिन लाहौर में पच्चीस जगहों पर आग लगाई गई। जिनमें आठ गम्भीर प्रकार की थी। मेयो अस्पताल में ५६ लाशें लाई गईं और १२० घायल व्यक्ति आए। छब्बीस घायल व्यक्तियों को सर गंगाराम अस्पताल में उपचारित किया गया। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि सिर्फ उन्हीं व्यक्तियों को अस्पताल लाया गया जिनकी चिकित्सा की आवश्यकता महसूस की गई और वैसे व्यक्ति जो घटनास्थल पर ही मर गए, उनकी सूचना तक नहीं दी गई। १२ अगस्त को मेयो अस्पताल में सतासी शवों और दो सौ घायलों का आमद हुआ। भारत नगर और मोहन लाल रोड तीखे हमलों के शिकार हुए जिनमें बहुतेरे गैर मुस्लिम मारे गए। भारत नगर में अनेक घरों को लूटा गया और उनमें आग लगा दी गई। काली बाड़ी मंदिर को लूटा गया और अपवित्र किया गया। पूरे शहर में गैर मुसलमानों की हत्या पुलिस वालों की उपस्थिति में की जा रही थी और उनका धन लूटा जा रहा था। रेलवे स्टेशन पर एक सौ बीस गैर मुस्लिम अमृतसर की गाड़ी पकड़ने का इंतजार कर रहे थे। खजाने की पेटियों की रक्षा में प्लेटफार्म पर पच्चीस सिंधी मुसलमान सिपाही तैनात थे। कुछ मुसलमानों ने सिपाहियों पर पत्थर फेंके और पूर्व निर्धारित योजनानुसार सिपाहियों ने तत्क्षण गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हिन्दुओं पर गोली वर्षा शुरू कर दी। पंद्रह लोग मारे गए और बारह घायल हुए। १२ और १८ अगस्त के बीच लाहौर रेलवे स्टेशन, गैर मुसलमानों के मौत का वास्तविक फंदा बना रहा। शहर में दंगा के कारण गैर मुसलमान शहर छोड़ने को विवश थे और उनके पलायन का एकमात्र मार्ग रेलवे स्टेशन था, क्योंकि सड़क मार्ग से यात्रा और भी संकटपूर्ण थी। ११ अगस्त की शाम को रेलवे स्टेशन यात्रियों से खचाखच भरा था। कुलियों ने सामान ढोने का मनमाना दाम वसूला। तनाव और चिंता की व्यापक स्थिति बनी हुई थी और जब यह समाचर मिला कि लाहौर आने वाली सिंध एक्सप्रेस रास्ते में ही मुस्लिम हमलावरों का शिकार बनी है, यात्रियों में भय की लहर दौड़ गई। उसके शीघ्र ही बाद सिंध एक्सप्रेस पहुँची और गैर मुस्लिम स्वयंसेवक विभिन्न डिब्बों से शवों को बाहर निकालने हेतु तेजी से आगे बढ़े। उन्होंने पाया कि पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की निर्दयता से हत्या की गई है और वे खून के कुंड में डूबे हुए थे। मरे हुए लोगों के शव अनेक प्लेटफार्मों को पार कर ढोया जा रहा था। गैर मुस्लिम यात्रियों में निस्तब्धता छाई हुई थी और उन्हें जैसे काठ मार गया था। वे अपने सामानों को अस्पष्ट अशुभकारी पूर्व चेतावनी वाले दृश्य में निमग्न मनःस्थिति के साथ देख रहे थे। लाहौर नगर की ओर धुएँ की विशाल मीनार दिख रही थी। सौभाग्य से उस समय अमृतसर से मुस्लिम शरणार्थियों की एक गाड़ी पहुँची और मुसलमान स्वयंसेवक मुस्लिम यात्रियों और उनके सामान बाहर निकालने में व्यस्त हो गए। फ्रंटियर मेल में यात्रा करने वाले यात्रियों पर वहगा के पास हमला हुआ। पर, भटिंडा एक्सप्रेस सुरक्षित अपने गंतव्य तक पहुँची। अगले दिन गैर मुसलमानों को रेलवे स्टेशन भी पहुँचना असंभव हो गया। उन्हें रास्ते में ही पकड़ कर कत्ल किया जाने लगा। इस नरहत्या में बलूच रेजिमेंट ने प्रमुख भूमिका निभाई। १४ और १५ अगस्त को रेलवे स्टेशन पर अंधाधुंध नरमेध का दृश्य था। एक गवाह के अनुसार स्टेशन पर गोलियों की लगातार वर्षा हो रही थी। मिलिटरी ने गैर मुसलमानों को स्वतंत्रतापूर्वक गोली मारी और लूटा।

समीक्षा : लूट के माल का अल्लाह का वादा और दारूल इस्लाम बनाने का मजहबी निर्देश कल भी था और आज भी है। सभी मुसलमानों के लिए समान है इसलिए सभी मुसलमान चाहे वे जिस हैसियत में हों, जेहाद में शामिल होते हैं मजहबी कट्टरता के कारण कोई उसकी उपेक्षा नहीं कर सकता। मुसलमानों में मजहबी कट्टरता क्यों होती है यह अध्ययन का भिन्न विषय है। लाहौर शहर में मुस्लिमों से हिन्दुओं–सिखों की जनसंख्या का अनुपात बहुत अधिक था, फिर भी अपनी जेहादी भावना, तैयारी और सामुदायिक एकजुटता के कारण आत्मविश्वास के साथ वे धमकी देने की स्थिति में थे कि यदि लाहौर को पाकिस्तान में शामिल नहीं किया गया तो उसे बलपूर्वक ले लेंगे। हिन्दू कमजोरी की उनको पूरी जानकारी होती है। इसलिए कुछ मुस्लिमों ने अपने हिन्दू मित्रों को चले जाने की सलाह दी। कुछ मुसलमान आत्मबोध या पारंपरिक समुदाय की नैतिकता से प्रभावित होने के कारण काफिर लोगों के बचाव में भी किसी न किसी रूप में शामिल हो जाते हैं, यद्यपि यह मजहब के निर्देशों के विरुद्ध होता है। **(शेष अगले अंक में)**

प्रतिष्ठा में,
श्री नरेन्द्र मोदी जी,
माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार।
साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली–११००११

विषय : मुस्लिम असुरक्षा पर अनावश्यक प्रश्न।

महोदय,

कृपया निम्नलिखित तथ्यों का संज्ञान लेने की कृपा करें:

१. पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने अपनी विदाई के क्षणों में दलित, मुस्लिम और ईसाइयों में असुरक्षा के सम्बंध में जो विचार ७ अगस्त, २०१७ को बेंगलूरू में और फिर १० अगस्त, २०१७ को राज्यसभा टीवी पर व्यक्त किए, उन विचारों ने देश की जनता को मायूस किया।

२. डॉ० राधाकृष्णन के बाद वह पहले उपराष्ट्रपति थे, जिन्हें दो कार्यकाल मिले।

३. क्या जब कांग्रेस सत्ता में थी, तो मुस्लिम सुरक्षित थे?

४. ऐसी कौन–सी बात है, जिससे मुस्लिम असुरक्षित हैं जबकि जमीनी हकीकत इसके उलट है क्योंकि समाज में उन्हें कुछ भी कहने और करने का हक ही नहीं, बल्कि अवसर भी हैं।

५. हर शहर के कुछ खास इलाकों में मुस्लिमों का जनसंख्या घनत्व बेतहाशा बढ़ जाता है और फिर उस क्षेत्र में जाने में आम हिन्दू भी असहज महसूस करने लगते हैं।

६. मुस्लिम बाहुल्य मौहल्लों में से असुरक्षा बोध से हिन्दू परिवार धीरे–धीरे मकान बेचकर सुरक्षित मौहल्लों में जाने लगते हैं।

७. ऐसे मौहल्लों में पुलिस और प्रशासन भी हाथ डालने से कतराते हैं।

८. यह प्रवृत्ति कुछ शहरों में चिंताजनक स्तर पर पहुँच गई है, हिन्दू–मुस्लिम बस्तियों का ऐसा सपाट विभाजन रोकने और इससे उपजी दूरी को कम करने का कोई प्रयास नहीं करता।

९. हमारे नेता मुस्लिम असुरक्षा को तो सेक्यूलर राजनीति के आइने में देख लेते हैं। किन्तु हिन्दू असुरक्षा का क्या?

१०. देश में मुस्लिम हितों की बात करना और इस्लाम की दुहाई देना तो सेक्यूलर है, लेकिन हिन्दू हितों की बात करना और हिन्दुत्व साम्प्रदायिक मान लिए गए हैं।

हमारा निवेदन है कि -

१. शहरों में मुस्लिमों के अलग मौहल्ले दिल्ली में भी हैं, जैसे – ओखला, पश्चिमी निजामुद्दीन, नबी करीम, दरियागंज, जामा मस्जिद, गाजीपुर आदि। इन क्षेत्रों में रह रहे हिन्दू परिवार मुसलमानों के दबदबे और क्रूर व्यवहार से तथा लड़कियों को उठा लेने की धमकियों से घबराकर औने–पौने दामों में घर बेचकर उत्तर प्रदेश के कैराना कस्बे की तरह ही अन्यत्र भाग रहे हैं। विशेषज्ञों और चिंतकों के समूहों से विचार करके देश विभाजन से पहले के इन तौर–तरीकों को रोकने और उनसे निबटने के उपाय अपनाने की कृपा करें।

२. सरकार विभिन्न भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करके यह सिद्ध करे कि हिन्दुस्थान में मुसलमान दुनियाँ के मुस्लिम देशों से भी अधिक सुरक्षित हैं, उनकी जनसख्या तेजी से ज्यादा श्रेणी के अनुसार बढ़ रही है और उन्हें बहुसंख्यकों की तुलना में अनेक अतिरिक्त सुविधाएँ और अधिकार मिले हुए हैं, जिनका वे उपभोग कर रहे हैं और उनके मुल्ला–मौलवी बेबाक बकवास कर रहे हैं और उन पर कोई दण्डात्मक कार्रवाई नहीं की जाती।

३. मुसलमानों के मुल्ला मौलवियों को धर्मगुरु, कुरान को धर्म पुस्तक और इस्लाम को धर्म बोलना–लिखना बंद होना आवश्यक है और कुरआन को मजहबी किताब तथा इस्लाम को मजहब बोला और लिखा जाए।

शीघ्र निर्णय करने की कृपा करेंगे ऐसा विश्वास है।

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

करोलबाग के हनुमान मूर्ति को हटाने से पहले अन्य संप्रदायों के धार्मिक स्थलों को हटाया जाये : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्रीय शहरी विकास मंत्री व दिल्ली विकास प्राधिकरण से मांग की है कि करोलबाग स्थित वर्षो पुरानी हनुमान जी की मूर्ति को हटाने से पहले दिल्ली में अतिक्रमण कर बने अन्य संप्रदायों के सैंकड़ों धार्मिक स्थलों को हटाया जाये। अन्य संप्रदायों के धार्मिक स्थलों को यदि पहले नहीं हटाया गया तो दिल्ली के लाखों हिन्दू करोलबाग स्थित हनुमान जी की मूर्ति को नहीं हटाने देंगे। श्री शर्मा ने कहा है कि याचिकाकर्ता हिन्दू विरोधी है तथा उसके हिन्दू विरोधी तत्वों के साथ मिलकर षड्यंत्र के तहत दिल्ली उच्च न्यायालय में याचिका दाखिल की है। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय शहरी विकास मंत्रालय व दिल्ली विकास प्राधिकरण को दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश को रूकवाने के लिये उच्चतम न्यायालय में याचिका दाखिल करनी चाहिए। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने आरोप लगाया है कि केवल हिन्दू आस्थाओं पर ही चोट किया जाता है। कभी हिन्दू मंदिरों को तोड़ने तो कभी हिन्दू पर्वो को मनाने से रोकने का षड्यंत्र हिन्दू विरोधियों द्वारा लगातार रचा जा रहा है। परन्तु गैर हिन्दुओं के धार्मिक स्थालों व पर्वों पर अंगुली उठाने की हिम्मत किसी में भी नहीं है। उन्होंने कहा है कि पूरी दिल्ली जाम से पटी है है। इसलिये केवल हनुमान मूर्ति को हटाने से दिल्ली का जाम समाप्त नहीं होगा।

शेष पृष्ठ 1 का

बाल हकीकतराय बलिदान....

अतिथियों व उपस्थितजनों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हम हिन्दू रक्षा व राष्ट्र रक्षा का संकल्प लें। बाल प्रतिभा खोज प्रतियोगिता में भाई परमानन्द शिक्षा निकेतन, सैनिक माडल स्कूल (विकास नगर), न्यू एज पब्लिक स्कूल (विकास नगर), गोल्फ सिटी, सेक्टर–७५ (नोएडा) बेबी पब्लिक स्कूल (भंगेल), बेबी पब्लिक स्कूल (गेझा), मार्डन सीनियर सेकंडरी स्कूल (ऋषभ विहार), श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठ्म (इब्राहिमपुर) सहित दिल्ली–एनसीआर के दो दर्जन विद्यालयों के बच्चे सम्मिलित हुए। बच्चों ने गायन, वादन, नृत्य आदि के माध्यम से कला का प्रदर्शन किया। उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाले बच्चों को मेडल देकर पुरस्कृत किया गया।

शेष पृष्ठ 1 का

हिन्दू महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी......

जनांदोलन शीघ्र शुरू करने का निर्णय लिया है। पूरे देश में इन मुददों पर धरना–प्रदर्शन, घेराव, पैदल यात्राएं आयोजित की जायेगीं। बैठक में बंसत पाटील, अनिल पवार, महंत पूनानन्द गिरी, महेन्द्र परमार, आचार्य रमेश मिश्रा, मोहन लाल वर्मा, योगेन्द्र वर्मा, जनार्दन उपाध्याय, ए. रामनाथन, राघव मिश्रा, जगदीश प्रसाद मिश्रा, ईश्वर प्रसाद, गुप्ता, एम. जयराज, राजेन्द्र पटेल, रेमन्ना पुडलकटटी, प्रमोद पंडित जोशी, अशोक पांडेय, मदन सिंह, साक्षी वर्मा, अभिषेक अग्रवाल, गौरव सिंह, चन्द्रप्रकाश त्रिपाठी, दीपेन्द्र सिंह, जीवराज रबाड़ी, साध्वी पवित्र शर्मा, अर्जुन सिंह, जयवीर शर्मा, माधव शास्त्री, किशन सी.जे., जितेन्द्र ठाकुर, लीला शाक्य साहित दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, राजस्थान, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, उड़ीसा, गुजरात प्रदेशों से आये हुए राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य सम्मिलित हुए।

शेष पृष्ठ 4 का

डायबिटीज में हृदय......

तेल, डालडा, चीज, मलाई, मक्खन आदि लेने से कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है जो डायबिटीक पेशेन्ट व हृदय रोगी के लिए घातक है।

❖ धूम्रपान, शराब, चाय–कॉफी, कोल्डड्रिंक्स, गुटखा, इनका परहेज रखें। यह कार्बन मोनोक्साइड और कार्बन डाइऑक्साइड के स्रोत हैं जोकि दोनों ही स्थिति में जानलेवा हैं।

❖ अत्यधिक मानसिक तनाव के दौरान मस्तिष्क से कई ऐसे रसायनों का रिसाव होता है, जिससे एकाएक मस्तिष्कीय धमनियों में खिंचाव (Coronary Artery Aspam) से आकस्मिक हृदयाघात की संभावना रहती है। अतः मधुमेह रोगी को अनावश्यक तनाव, क्रोध, वाद–विवाद आदि से दूर रहना चाहिए।

❖ सबसे महत्त्वपूर्ण बात कि डायबिटीक पेशेन्ट को हृदय रोगों से बचाव या हृदयाघात से बचाव के लिए समय–समय पर कई तरह के टेस्ट एवं जाँच कराते रहनी चाहिए। जैसे–प्रत्येक महीने में १–२ बार अपना ब्लडप्रेशर चैक कराएँ, पाँच–सात महीने में हृदय की E.C.G. जाँच कराते रहें। इनके अलावा हृदय रोगियों को "२ डी. ईको एक्सरसाइज्ड" ई.सी.जी. यानी टी.एम.टी. (T.M.T.) परीक्षण, होल्टर मोनिटरिंग, थैलेयम स्कैन और ईको कार्डियोग्राफी आदि कराते रहना चाहिए।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

बालवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह 2018

भगवद्गीता का पाठ करते बच्चे

मनमोहक नृत्य प्रस्तुत करते हुए स्कूल के बच्चे

देश भक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए

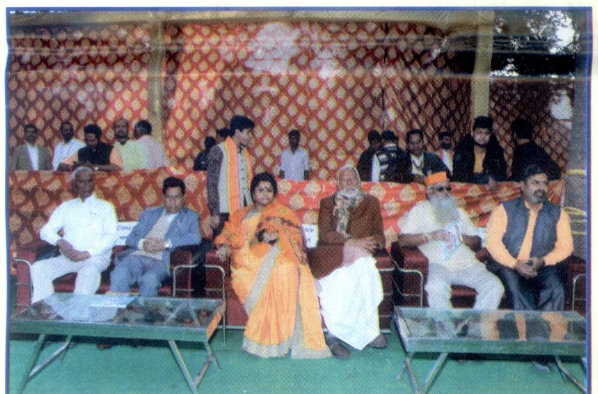
विभिन्न प्रदेशों के पदाधिकारी

समारोह में उपस्थित साधु-संत

समारोह में उपस्थित जन समूह

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक का सम्बोधन

भाजपा नेता श्याम जाजू का सम्बोधन

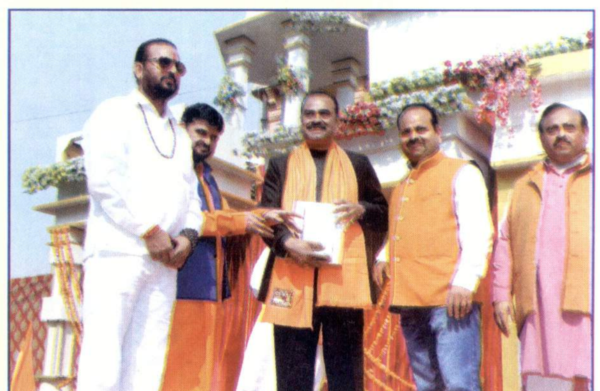
समृति चिन्ह प्रदान करते हुए हिन्दू महासभा के पदाधिकारी

ओ.पी. त्यागी का सम्मान करते हिन्दू महासभा नेता

हिन्दू महासभा के वरिष्ठ पदाधिकारियों का सम्मान

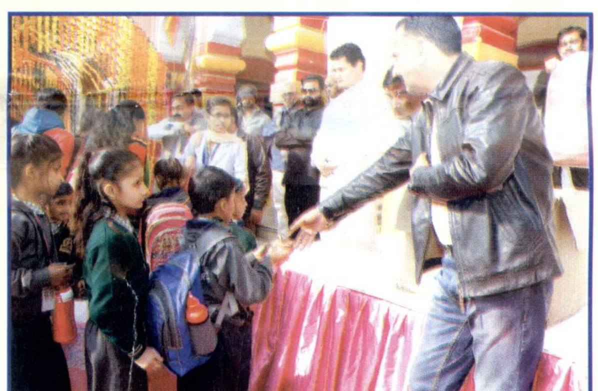
प्रसाद ग्रहण करते हुए बच्चे

प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत बच्चे

द्वितीय पुरस्कार से पुरस्कृत बच्चे

पुरस्कृत किये गये बच्चों के साथ राष्ट्रीय महामंत्री

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार-वीरवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

बालवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह 2018

गोल्फसिटी सेक्टर 75 की टीम के साथ राष्ट्रीय महामंत्री

विनोद दूबे को सम्मानित करते हुए हिन्दू महासभा नेता

जादूगर सूर्या को सम्मानित करते हुए हिन्दू महासभा नेता

वाणी शर्मा को पुरस्कृत करते हुए हिन्दू महासभा नेता

निर्णायक मंडल को पुरस्कृत करते राष्ट्रीय अध्यक्ष

अजय त्यागी को सम्मानित करते हुए हिन्दू महासभा नेता

नवीन त्यागी शाखा प्रबंधक का सम्मान

संस्कृत विद्यापीठम् के बच्चों का सम्मान

कबिरा खड़ा बाजार में

लड़खड़ाता न्यायतंत्र, खतरे में लोकतंत्र

देश में इस वक्त सुप्रीम संकट की चर्चा जोरों पर है। सुप्रीम कोर्ट के चार वरिष्ठ न्यायाधीशों का प्रेस कांफ्रेंस में यह कहना कि सुप्रीम कोर्ट के भीतर सब कुछ ठीक नहीं है और देश का लोकतंत्र खतरे में है, वाकई सुप्रीम संकट ही है। लेकिन इसे केवल न्यायपालिका तक सीमित रखकर नहीं देखा जाना चाहिए। दरअसल यह पूरे देश के सामने अभूतपूर्व सवाल और समस्या है। आजाद भारत के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ कि सुप्रीम कोर्ट की आंतरिक अनबन इस तरह सार्वजनिक तौर पर प्रकट की गई हो। प्रेस कांफ्रेंस करने वाले चारों न्यायाधीशों, जस्टिस चेलमेश्वर, जस्टिस मदन लोकुर, जस्टिस कुरियन जोसेफ और जस्टिस रंजन गोगोई ने मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा पर काम के बंटवारे में नियमों का पालन न करने समेत कई अनियमितताओं का खुलासा किया है और यह कहा है कि अपनी शिकायतों का एक पत्र उन्होंने प्रधान न्यायाधीश को भी सौंपा है। ये चारों न्यायाधीश कानून और संविधान की परंपराओं के विशेषज्ञ हैं। उन्हें अच्छी तरह मालूम है कि जो कदम उन्होंने उठाया है, उसके क्या परिणाम हो सकते हैं। इनकी परिणति उनके त्यागपत्र के रूप में हो सकती है और जिनके पास तरक्की के अवसर हैं, उससे वंचित हो सकते हैं। लेकिन आशंकाओं के गढ़ों और मठों को तोड़ते हुए उन्होंने अभिव्यक्ति का खतरा उठाया। अब इस मुद्दे पर न्यायपालिका के भीतर सक्रियता बढ़ गई है कि इस मतभेद को जल्द से जल्द सुलझाया जाए। सरकार भी अपनी तरह से मामले को देख रही है और विपक्षी दल कांग्रेस ने इसे गंभीर मामला बताया है। भाजपा को यह रास नहीं आया कि कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने इस मसले पर प्रेस कांफ्रेंस कर अपनी चिंता जाहिर की है। लेकिन यह वक्त राजनीति का नहीं बल्कि गहन विमर्श का है कि चारों न्यायाधीशों ने जो कुछ कहा, उसके पीछे कारण क्या रहे होंगे और क्यों उन्हें इस तरह लीग से हटकर अपनी तकलीफ जाहिर करने की जरूरत पड़ी। भारत का लोकतंत्र कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के आधार स्तंभों पर खड़ा है। इनमें से किसी का भी हिलना लोकतंत्र की बुनियाद हिला सकता है। इन तीनों अंगों में भी आतंरिक लोकतंत्र बेहद जरूरी है, और इस वक्त सुप्रीम कोर्ट में सब कुछ ठीक नहीं है, की जो बात सामने आई है, उससे यही पता चलता है कि न्याय की इस सर्वोच्च संस्था में लोकतांत्रिक मूल्य ताक पर रखे जा रहे हैं। अब तक यहां यही परंपरा रही है कि महत्वपूर्ण मामलों में सामूहिक तौर पर निर्णय लिए जाते हैं। लेकिन अपने पत्र में न्यायाधीशों ने यह कहा है कि मुख्य न्यायाधीश महत्वपूर्ण मामलों को बिना किसी पुख्ता कारण के उन बेंचों को सौंप रहे हैं, जो उनकी पसंद के हैं। जब प्रेस कांफ्रेंस में यह पूछा गया कि क्या जज लोया की मौत की जांच के संबंध में भी पत्र में कहा गया है तो जवाब केवल एक शब्द में मिला– यस। लेकिन इस एक शब्द के पीछे बहुत बड़ी व्यथा दिखाई देती है। जज लोया की मौत की गुत्थी सोहराबुद्दीन फर्जी मुठभेड़ से जुड़ी है और सत्तारूढ़ पार्टी तक इसके सूत्र जाते हैं। इस तरह के कई हाई प्रोफाइल मामले और हैं, जिनका खुलासा अभी देश के सामने हुआ ही नहीं है। लेकिन एक बात जाहिर है कि न्यायतंत्र में भी इंसाफ के नाम पर खिलवाड़ चल रहा है। जनता तो अब तक न्यायपालिका पर भरोसा करती आई है कि यहां देर–सबेर न्याय मिलेगा ही। लेकिन जब सुप्रीम कोर्ट के भीतर न्याय का संकट हो, तो जनता अपने इंसाफ के लिए किस पर यकीन करेगी। फिलहाल इस विवाद के जल्द सुलझने की उम्मीद की जा रही है। लेकिन आइंदा ऐसा नहीं होगा, यह सुनिश्चित करने की जरूरत है। वर्ना न्याय तंत्र लड़खड़ाएगा और लोकतंत्र औंधे मुंह गिरेगा।

वीरेश त्यागी

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 31 जनवरी से 06 फरवरी 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011.23365138, 23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।